प्रकाशन तिथि : 01/07/2024 वर्ष 76 • अंक 4 • जून 2024 कुल पेज : 16 • मूल्य : ₹ 2

प्रकाशन समाचार

राजकमल प्रकाशन समूह

1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली-110002 ❒ शाखाएँ : अशोक राजपथ, साइंस कॉलेज के सामने, पटना-800006 ❒ पहली मंज़िल, दरबारी बिल्डिंग, महात्मा गांधी मार्ग, प्रयागराज-211001 मुम्बई : 1, अनमोल सोआराबजी संतुक लेन, धोबी तलाव, मरीन लाइन-400002 ❒ फोन : 23274463, 23288769 ❒ व्हाट्सएप्प नम्बर : +91 9311397733 ❒ info@rajkamalprakashan.com

राजकमल कृति-उत्सव में मशहूर दास्तानगो महमूद फ़ारूक़ी और पूनम गिरधानी ने कही 'दास्तान-ए-रेत-समाधि'

8 जून, 2024 (शनिवार) नई दिल्ली। अंतरराष्ट्रीय बुकर पुरस्कार से सम्मानित इकलौते हिन्दी उपन्यास 'रेत-समाधि' के साथ एक और उपलब्धि जुड़ गई है। मशहूर दास्तानगो महमूद फ़ारूक़ी और पूनम गिरधानी ने 8 जून शाम गीतांजलि श्री के इस बहुचर्चित उपन्यास की कहानी दास्तान के रूप में पेश की। यह आयोजन राजकमल प्रकाशन के कृति-उत्सव के तहत इंडिया हैबिटेट सेंटर में हुआ। इस दौरान लार्ड मेघनाद देसाई, शर्मिला टैगोर, विशाल भारद्वाज, रेखा भारद्वाज, अशोक वाजपेयी, सुधीर चन्द्र, समेत बड़ी संख्या में लेखक, साहित्यप्रेमी श्रोता मौजूद रहे। 'दास्तान-ए-रेत-समाधि' शुरू होने के ठीक पहले, आयोजन में उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए गीतांजलि श्री ने कहा, "रेत समाधि पर दास्तानगोई के इस आयोजन से मुझे बहुत ख़ुशी है। मैंने कहानी लिखकर बताई है, उसे बोलकर बताने में कोई अलग ही मज़ा पैदा होगा। अपने फ़न में माहिर महमूद फ़ारूक़ी इसे कर रहे हैं, बहुत बड़ी बात है। ज़रूर कुछ नया होगा, कहानी के परिवेश और संदर्भ को वे अपने ख़ास कलात्मक ढंग से रचेंगे। रचनात्मकता की अलग एक यात्रा यह होगी। उपन्यास को नई साँसें मिलेंगी।" दास्तान की शुरुआत करते हुए महमूद फ़ारूक़ी ने सबसे पहले 'रेत-समाधि' पर दास्तान बनाने के अपने अनुभव साझा किए। उन्होंने कहा, "मुझे बहुत ख़ुशी है कि 'रेत-समाधि' पर दास्तान बनाने का मुझे मौक़ा मिला। इसके लिए मैं राजकमल प्रकाशन और गीतांजलि जी दोनों का बहुत शुक्रगुज़ार हूँ। बेहद बारीकी से बुने गए इस उपन्यास को दास्तान में ढालना वाक़ई बहुत मुश्किल था। दास्तानगोई के अपने बीस साल के सफ़र में इसके बराबर का चुनौतीपूर्ण काम शायद ही कोई रहा हो।" महमूद फ़ारूक़ी ने कहा, "रेत-समाधि की कहानी दूसरे उपन्यासों से बहुत अलग है। यह जिस तरह से परत-दर-परत अपनी कहानी को खोलता है, ऐसी बारीक कहानी की दास्तान पर काम करते हुए मैं काफ़ी घबरा रहा था। हमें इसके लिए ऐसी कोई राह चाहिए थी कि जिन श्रोताओं ने किताब पढ़ी हो उनको भी अच्छा लगे और जिन्होंने नहीं पढ़ी हो उनको भी कहानी समझ में आए। हमारी कोशिश यही है कि इस उपन्यास की अस्मिता और दास्तान सुनने वालों की जिज्ञासा बनी रहे। वो चीज़ जिसकी बुनावट ऐसी हो कि जिसे ख़ामोशी से अकेले में पढ़ा जाए, उस चीज़ को बाआवाजे-बुलंद मजमे में सुनाना और उसके लिए तैयार करना बिलकुल विपरीत धाराएँ हैं। इन विपरीत धाराओं में चलना एक चुनौती थी," इस अवसर पर राजकमल प्रकाशन के प्रबंध निदेशक अशोक महेश्वरी ने सभी का आभार व्यक्त करते हुए कहा, "रेत-समाधि हमारे समय की महत्वपूर्ण कृति है। यह महाभारतीय रचना है। कहा जा सकता है कि जो परिवार में है, जो साहित्य में है, जो हमारे आसपास है, वह रेत-समाधि में है। कृति या कृतिकार पुरस्कार-सम्मान मिलने से महत्वपूर्ण नहीं हो जाते, सम्मान उन्हें पहचान देते हैं। उनकी ओर ध्यान आकर्षित कराते हैं। अंतरराष्ट्रीय बुकर पुरस्कार ने इस महान रचना की ओर सारी दुनिया का ध्यान आकृष्ट किया है। विश्व की प्राय: सभी प्रमुख भाषाओं में इसका अनुवाद हो चुका है या हो रहा है। और यह भूरि-भूरि प्रशंसा पा रही है।"

उन्होंने कहा, "मुझे इस बात का गर्व है कि मैं रेत-समाधि के लेखन और प्रकाशन से लेकर अब तक की यात्रा में जुड़ा रहा हूँ। मैं इसके एकदम शुरुआती पाठकों में से एक हूँ। 'दास्तान-ए-रेत-समाधि' इसकी कामयाबी का एक और पड़ाव है। प्रकाशन के बाद ही महमूद फ़ारूक़ी ने इसे पढ़ा और पसंद किया। आज हम उनकी बुलंद आवाज़ में रेत-समाधि का नया पाठ सुनने जा रहे हैं। निश्चय ही यह हम सबके लिए यादगार अनुभव का क्षण है।" शेष पृष्ठ 2 पर

पृष्ठ 1 का शेष : दास्तान-ए-रेत-समाधि'

बहुत जीवंतता के साथ यह दास्तान पेश की गई : प्रियदर्शन

शनिवार 8 जून को मशहूर दास्तानगो महमूद फ़ारूक़ी ने इंडिया हैबिटेट सेंटर में गीतांजलि श्री के उपन्यास 'रेत समाधि' पर केंद्रित दास्तान पेश की थी। बड़ी लम्बी, बड़ी गहरी 'दास्तान-ए-रेत-समाधि'। जब गीतांजलि श्री के उपन्यास 'रेत समाधि' के अनुवाद को बुकर सम्मान मिलने की ख़बर आई तो हिन्दी साहित्य की हलचलों से अनजान 40 करोड़ पार की विशाल हिन्दी पट्टी ने अचरज से पूछा—यह गीतांजलि श्री कौन है, और यह 'रेत समाधि' कैसी किताब है। बुकर की लांग लिस्ट में किताब के आते ही इसकी हज़ारों और आने वाले दिनों में लाखों प्रतियाँ बिक गईं। ख़रीदने वालों ने यह मान कर ख़रीदी कि यह बहुत दिलचस्प, चटपटी सी किताब होगी- जिसमें गूढ़ता भी इतनी आकर्षक पैकेजिंग के साथ होगी कि एक बड़ा जीवन दर्शन आसानी से समझ में आ जाएगा। आख़िर दुनिया इस पर यों ही नहीं रीझी है। लेकिन पढ़ने वालों ने पाया कि यह तो बहुत मुश्किल किताब है—पाँच पन्नों में ही कहानी बिखर जाती है, पचास पन्नों में भाषा समझ में नहीं आती है और पचहत्तर पन्नों तक पहुँच कर ऊब कर इसे रख देने का जी करता है। उपन्यास में सबकुछ है मगर कोई दास्तान नहीं है। यह मासूम और मायूस पाठकीय प्रतिक्रिया अनुभव के एक गहरे और जटिल संसार या सागर में छलांग न लगा पाने के अभ्यास का नतीजा थी जिस पर और बात करना ऐसे विषयांतर का जोख़िम मोल लेना होगा, जिसमें सबकुछ और बिखर जाने का ख़तरा है।

बहरहाल, जब यह ख़बर आई कि 'रेत समाधि' पर मशहूर दास्तानगो महमूद फ़ारूक़ी एक दास्तान तैयार कर रहे हैं तो हैरान होना स्वाभाविक था। एक ऐसी कृति पर दास्तान कैसे तैयार की जा सकती है जो दास्तानों के पार चली जाती है? 'रेत समाधि' में सब कुछ है, मगर वैसी इकहरी दास्तान नहीं है जिसे कुछ संपादित करके, रटकर, कुछ नाटकीय अंदाज़ में प्रस्तुत करते हुए छुट्टी पा ली जाए। यह एक बेहद जटिल पाठ है जिसके कई सिरे हैं। ये सिरे कहीं आपस में मिलते हैं और कहीं नहीं मिलते हैं। फिर वह लिखी इस अंदाज़ में गई है कि अतीत, वर्तमान, भविष्य, इतिहास, भूगोल और साहित्य सब गड्डमड्ड होते चलते हैं। पढ़ते हुए तो यह संभव है कि पाठक फिर से पन्ने पलट ले, वापस लौट कर पुरानी पढ़त को फिर से बाँचे और फिर कथा का मर्म समझे। लेकिन सुनते और सुनाते हुए यह सुविधा नहीं है। जो है, बस एक बार में इस तरह बयान किया जाना है कि वह सिर्फ़ समझ में ही न आए, बल्कि दिल में उतर आए, टीसता रहे। फिर यहाँ तो कोई एक क़िस्सा नहीं है—एक विराट जंगल की तरह कई क़िस्से हैं। इन क़िस्सों में परिवार है—माँ-बेटी-भाई-भाभी-नौकर-चाकर और दुनिया है, बँटवारा, दंगे, दहशत, बेदख़ली, स्मृति-विस्मृति है, भारत-पाकिस्तान, दिल्ली-लाहौर और खैबर है और कभी कौवे-तीतर, कभी आम और कभी साड़ी और कभी दीवार और कभी खिड़की और कभी घर का खेल है। ज़ाहिर है, महमूद फ़ारूक़ी ने दास्तान नहीं चुनौती उठाई थी। उन्हें भी एहसास रहा होगा कि 'रेत समाधि' को किसी सपाट दास्तान की तरह बयान करना मुश्किल है। हालाँकि वे किसी भी दास्तान को सपाट रहने नहीं देते। वे बहुत संजीदगी और सूक्ष्मता से किसी कृति को अपनी अलग सी दास्तान में बदल डालते हैं। इसके लिए वे तमाम भाषाओं के स्रोतों का सहारा लेते हैं, अपने विपुल अध्ययन का परिचय देते हुए अंग्रेज़ी, फ्रेंच, उर्दू, फ़ारसी, हिन्दी और संस्कृत सहित कई अन्य भाषाओं के लेखकों, विद्वानों और दार्शनिकों के उद्धरण जोड़ते हुए अपनी दास्तान को इतना समृद्ध कर डालते हैं कि दर्शक ठगा-सा और बँधा-सा रह जाता है।

'रेत समाधि' में भी यह युक्ति दिखाई पड़ती है। दास्तान की शुरुआत संस्कृत के श्लोक से होती है, उसमें धीरे-धीरे उर्दू के शेर जुड़ते जाते हैं, मूल कहानी तक आने से पहले एक लंबी और गहरी भूमिका सुनने वालों के लिए आगे बढ़ने की ज़मीन तैयार करती है और फिर सुनने वाले के सामने 'रेत समाधि' खुलती है। लेकिन फिर दुहराने की ज़रूरत है कि 'रेत समाधि' को खोलना इतना आसान नहीं। वह जितनी कथा में है, उतनी ही भाषा में, जितना वह कहे जा रहे में है, उससे ज़्यादा चुप्पी में, जितना वर्तमान में है, उससे ज़्यादा उस अतीत में, जिसका कोई सुराग नहीं मिलता, वह सरहदों के आरपार चली मारकाट में है, और इस मारकाट के भी पार उस मोहब्बत में, जिसकी याद की उँगली थामे अस्सी साल की एक बुज़ुर्ग आधुनिक दुनिया के नियम-क़ानूनों को धत्ता बताती हुई ख़ैबर में चली आई है और कलाशनिकोव लेकर पहरा देने वाले ख़तरनाक क़िस्म के लोगों से फूलों के गमले मँगवा रही है। तो कहानी के किसी रूपाकार में ढलने से, किसी डिब्बे में अटने से इनकार करने वाली इस कहानी के भीतर महमूद बहुत सावधानी से उतरते हैं। वे उन अंशों को चुनते हैं जिनसे कुछ कथा का मर्म खुले, कुछ ज़ुबान का लुत्फ़ मिले, लेकिन इससे आगे जाकर वे जैसे 'रेत समाधि' का अपना पाठ तैयार करते हैं जिसमें कोशिश उस मूल तत्व को, उस मूल तंतु को पकड़ने की होती है जिससे इस दास्तान की रूह बुनी गई है। यह परिवारों में चलने वाले टकरावों से लेकर मुल्कों के बीच चलने वाले युद्धों और उसकी वजह से खींची जाने वाली सरहदों की व्यर्थता को बताने वाली कथा है— याद दिलाने वाली कि मज़हब और मुल्क के नाम पर क्या कुछ लहूलुहान होता रहा है, कि इन सबके बावजूद एक मूर्ति बची रहती है, एक मोहब्बत बची रहती है जो अपने मुकाम तक पहुँच कर ही मानती है—भले इसके लिए उसे गोली खानी पड़े। बेशक, यह गोली वाला प्रसंग महमूद ने संपादित कर दिया है-शायद इसीलिए कि असली कहानी जीने-मरने या सलामत लौट आने की नहीं, वहाँ तक पहुँचने की है जहाँ परिवार मायने नहीं रखते, मुल्क मायने नहीं रखते, सरहदें मिट जाती हैं—और इन सब पर हावी हो जाती है एक बहुत पुराने लगभग आदिम रिश्ते की वह लकीर जिसे एक बुढ़िया दिल्ली से लाहौर तक अपनी छड़ी से खींचती हुई बाक़ी सब लकीरों से बड़ा बना डालती है। (हालाँकि मैं होता तो वह गोली वाला प्रसंग भी बचाने की कोशिश करता- जिन्होंने मूल उपन्यास पढ़ा है,

उन्हें आख़िर इस मोड़ का इंतज़ार था और यह मोड़ बताता कि दरअसल संतों वाली शहादत क्या होती है— वह रेत-समाधि कैसे बनती है जिसे काल की हवाएँ नहीं मिटा पातीं।) बहरहाल, दो-तीन बातें और। उपन्यास बहुत बड़ा है और इसलिए बहुत संपादन के बावजूद, बहुत सारे अंश छोड़ने के बावजूद दास्तान भी बहुत लंबी बनी। इसके बाद भी इसने लोगों को देर तक बांधे रखा तो, इसका श्रेय बहुत सावधानी से तैयार की गई स्क्रिप्ट को तो जाता ही है, महमूद फ़ारूक़ी और पूनम गिरधानी की दास्तानगोई को भी जाता है। उन्होंने बहुत जीवंतता के साथ यह दास्तान पेश की, जहाँ नाटकीयता की गुंजाइश थी, वहाँ उसे बचाए रखा और जहाँ मद्धिम आवाज में काम चल सकता था, वहाँ पिच ऊँची नहीं होने दी। बँटवारे के दौरान लाहौर से दो लड़कियों के भागने की दास्तान कहते हुए पूनम गिरधानी ने अपने रंगमंचीय अनुभव की मिसाल पेश की—उस दौर की दहशत और सिहरन उनकी आवाज में, उनके अंदाज़ में जैसे बिल्कुल बोलती रही। लेकिन जब दास्तानें बहुत लंबी होती जाती हैं, जब सुनने वाले वाह-वाह करते रहते हैं तो शायद दास्तानगो भी कभी-कभी अपनी दास्तान के जादू की गिरफ़्त में आ जाता है। उस दास्तान में अपनी बात, अनुभव जोड़ते जाने का उसका मोह फिर दास्तान को बाधित करने लगता है। इस दास्तान में ग्रहम ग्रीन, दॉस्तोएव्स्की सहित कई सारे नाम जुड़ते चलते हैं, उनके उद्धरण आते चलते हैं और फिर एक मोड़ पर यह कुछ चिप्पियों जैसे लगने लगते हैं। काश कि वे कुछ कम होते। इससे दास्तान का अनुभव शायद कुछ गाढ़ा ही होता। फिर इसमें उस सरलीकरण से बचने की संभावना भी होती जिसमें हर समस्या का हल इंसानियत या मोहब्बत के आईने में देखने की एक शैली बन जाती है। लेकिन शायद इतनी छूट हमें दास्तान कहने वाले को देनी होगी। उसका हक़ बनता है कि कभी-कभी वह हमें उड़ाता हुआ इतनी दूर भी ले जाए कि ज़मीन पर जल्द लौटने की चाहत हो। बहरहाल, इस मामूली से एतराज़ के अलावा बाक़ी जो कुछ था, वह एक बहुत समृद्ध, अनुभव से आप्लावित शाम की स्मृति दे गया है। याद आता रहा कि हम यह दास्तान ऐसे दौर में सुन रहे हैं जब सरहदों और मज़हबों के आरपार लकीरों को गाढ़ा करने की नादान कोशिशें जारी हैं। इस पार कई बोलने वाले जेलों में बंद हैं तो उस पार भी एक शायर अहमद फ़रहाद को बीते दिनों वहाँ की सुरक्षा एजेंसियां उठा ले गई हैं जिसका अभी तक कुछ पता नहीं चला है। इस दौर में ऐसी दास्तानें और इनका बार-बार कहा जाना हमारे लिए एक बड़ी राहत है।

इश्क़ और इंक़लाब के शायर फ़ैज़ अहमद फ़ैज़ की चार किताबें

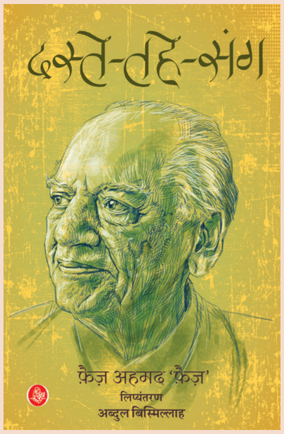

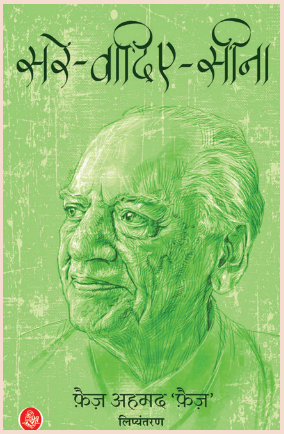

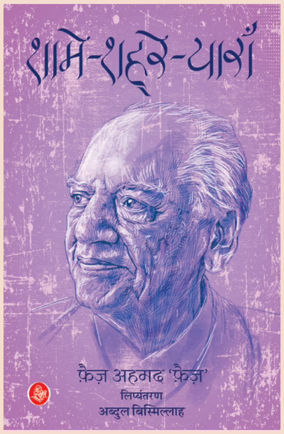

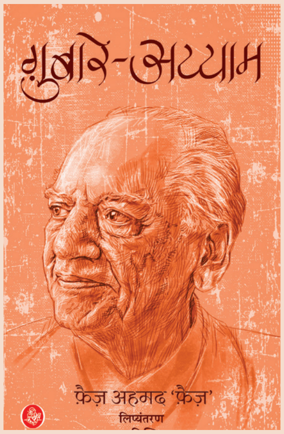

'दस्ते-तहे-संग' में फ़ैज़ की बेहद मशहूर नज़्मों में से एक 'आज बाज़ार में पा-ब- जौलाँ चलो' भी शामिल है। इस नज्म को उन्होंने 1959 में लिखा था। लाहौर की गलियों से उन्हें मय जंजीरों के घोड़ागाड़ी से क़िला लाहौर की टॉर्चर सेल ले जाया गया था। इस नज़्म के पीछे उनका वही अनुभव है। हर हाल में आज़ादी के शैदाई फ़ैज़ की यह नज़्म उनकी शख़्सियत और शायरी दोनों की ऊँचाई को बयान करती है। 1960 के दशक के शुरुआती सालों में प्रकाशित 'दस्ते-तहे-संग' में उस दौर में लिखी हुई अन्य नज़्में, ग़ज़लें और क़तआत भी संकलित हैं जिनमें से कुछ मास्को, बम्बई और लन्दन में भी लिखी गईं। कविताओं के अलावा इस संकलन का ख़ास आकर्षण फ़ैज़ की एक तक़रीर है जो उन्होंने अन्तरराष्ट्रीय लेनिन शांति पुरस्कार ग्रहण करते हुए उर्दू में दी थी। 'फ़ैज़... अज़ फ़ैज़' शीर्षक से उन्हीं का लिखा हुआ एक और आलेख भी यहाँ आप पाएँगे जिसमें वे अपने शुरुआती दिनों के बारे में बताते हैं और उस दौरान लिखी गई कविताओं की पृष्ठभूमि से भी हमें अवगत कराते हैं।

'ग़मे-जमाना' के गहरे अहसास से पगी नज़्मों-ग़ज़लों और क़तआत के इस संग्रह सरे-वादिए-सीना में फ़ैज़ की 1965 से 1971 के दौरान लिखी रचनाएँ शामिल हैं। 'लहू का सुराग' और 'ज़िन्दाँ- ज़िन्दाँ शोरे-अनल-हक़' शीर्षक वे नज़्में भी इसी संकलन में शामिल हैं जिन्हें फ़ैज़ ने कराची में विरोध-प्रदर्शन कर रहे लोगों पर हुई फायरिंग के बाद लिखा था। युद्ध की पृष्ठभूमि में लिखी गई दो प्रसिद्ध नज़्में भी इस किताब का हिस्सा हैं- 'ब्लैक आउट' और 'सिपाही का मर्सिया'। शीर्षक कविता 'सरे-वादिए-सीना' का विषय तो है ही अरब-इसरायली युद्ध। साल 1967 में पाकिस्तान के स्वतंत्रता दिवस पर लिखी गई उनकी बेहद चर्चित नज़्म 'दुआ' इस संकलन को ख़ासतौर पर आकर्षक बनाती है जिसमें फ़ैज़ ने मुल्क के अवाम की पीड़ा और स्वप्नों को शब्द दिए थे-'जिनके सर मुंतज़िरे-तेग़े-जफ़ा हैं उनको/दस्ते-क़ातिल को झटक देने की तौफ़ीक़ मिले।'

'शामे-श-याराँ' फ़ैज़ की आख़िरी किताबों में से एक है। साल 1979 में प्रकाशित इस कविता संग्रह में उनकी कई रचनाएँ वे हैं जिन्हें उन्होंने विभिन्न यात्राओं के दौरान अलग-अलग शहरों में लिखा। ढाका से वापसी पर 1974 में लिखी वह प्रसिद्ध ग़ज़ल भी इसी किताब में है जिसमें वे कहते हैं- 'हम के ठहरे अजनबी इतनी मुदारातों के बाद/ फिर बनेंगे आशना कितनी मुलाक़ातों के बाद।' इस संकलन में फ़ैज़ की लिखी हुई कुछ पंजाबी नज़्में भी शामिल हैं और कुछ वे मर्सिए व गीत आदि भी जिन्हें उन्होंने किसी के कहने पर लिखा। नाज़िम हिकमत और कजाकिस्तान के कवि उल्जुज़ उमर अली सुलेमान की कविताओं के कुछ अनुवाद भी इसी संग्रह में शामिल किए गए थे। इनके अलावा जो चीज़ 'शामे-शहरे-याराँ' को ख़ासतौर पर संग्रहणीय बनाती है, वह है खुद फ़ैज़ का लिखा एक आत्मकथ्य जिसमें वे बचपन से जवानी तक के अपने जीवन और आसपास के बारे में बड़े आकर्षक ढंग से लिखते हैं।

'गुबारे-अय्याम' फ़ैज़ अहमद फ़ैज़ की आखिरी कविता पुस्तक है जिसका प्रकाशन उनके निधन के बाद हुआ था। साल 1981 से 1984 के बीच लिखी गईं इन नज़्मों और ग़ज़लों का मुख्य स्वर अपने पूरे जीवन पर दृष्टिपात करने जैसा है। जैसाकि हमें मालूम है उनका निजी और सार्वजनिक जीवन असाधारण ढंग से घटनाप्रधान रहा। जेल भी गए और जीवन के कई साल निर्वासन में भी गुज़ारे।'गुबारे-अय्याम' की पहली कविता 'तुम ही कहो क्या करना है' में फ़ैज़ ने प्रगतिशील सोच वाले उन तमाम लोगों के संघर्ष को शब्द दिए हैं जिन्होंने पूरी मानवता के लिए बराबरी और इज़्ज़त के सपने देखे थे।

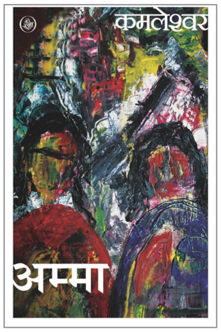

अम्मा (उपन्यास)

— कमलेश्वर

कमलेश्वर का यह उपन्यास एक आदर्श सामाजिक व्यवस्था की वकालत करता है जिसमें अपने बैरियों के लिए भी स्नेह व सम्मान की गुंजाइश हो। अपने रचनात्मक कौशल से उन्होंने इस उपन्यास के विस्तृत कथा-फलक को जिस तरह कम शब्दों में सम्भव किया है, वह क़ाबिले-तारीफ़ है। इसमें स्वाधीनता के संघर्षकाल से लेकर सती-प्रथा विरोध तक की अनुगूँजें सुनी जा सकती हैं। उपन्यास में अंग्रेज़ सिपाहियों की क्रूरता और रूढ़िवादी पारम्परिक समाज में विधवा स्त्री की त्रासद स्थिति का बड़ा ही मार्मिक चित्रण हुआ है।

₹ 495 HB 9788126711963

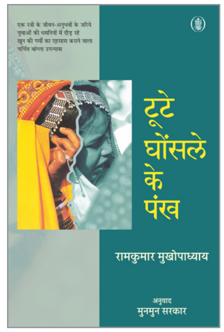

टूटे घोंसले के पंख (उपन्यास)

— रामकुमार मुखोपाध्याय

यह एक महिला की डायरी के शिल्प में लिखा गया उपन्यास है। यह शिल्प इसलिए सही है कि डायरी में ही कोई नौजवान महिला जीवन के अनुभव, अपनी पसन्द-नापसन्द एवं समाज और अपनी निजी प्रतिक्रियाओं को दर्ज करती है। ऐसा लेखन जिस तरह स्वत:स्फूर्त होता है, वैसे ही स्पष्ट भी। यह उपन्यास पाठक को उबाऊ नहीं लगता। लेकिन उपन्यास की सबसे ख़ास बात है—उसके कथ्य और शिल्प का नयापन। नौजवानों की धमनियों में दौड़नेवाले ख़ून की गर्मी का अहसास और उत्साह इस उपन्यास की पंक्ति-पंक्ति में निहित है, जिसे हर पढ़नेवाला अनुभव करेगा।

₹ 395 PB 9788171196609

वे दिन (उपन्यास)

— निर्मल वर्मा

यह निर्मल वर्मा का प्रथम उपन्यास है। क्रिसमस के चन्द शान्तिपूर्ण दिनों की इस गाथा में एक अवसादपूर्ण प्रेमकथा है, जो बर्फ़ और धूप, छुट्टियों के ख़ालीपन, पुराने शहर के पुलों और टावरों के बीच चुपचाप चलती है। हर पात्र का अपना अतीत है, जो यूरोप की युद्धोत्तर पीढ़ी की अभिशप्त छाया से जुड़ा है, और उपन्यास के विभिन्न पात्रों को जोड़नेवाली एक 'रहस्यमय' नियति भी है, जो छोटी-से-छोटी घटना को अर्थवत्ता प्रदान करती है।

₹ 299 PB 9789360864217

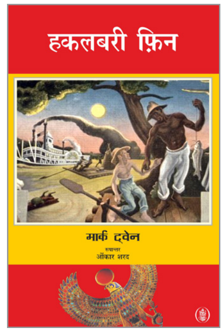

हकलबरी फ़िन (उपन्यास)

— मार्क ट्वेन

1884 में प्रकाशित यह उपन्यास मार्क ट्वेन की श्रेष्ठतम रचनाओं में एक माना जाता है। उपन्यास की कहानी के केन्द्र में हकलबरी फ़िन नाम का एक किशोर है जिसे उसके दोस्त हक कहते हैं। नशेड़ी पिता द्वारा पाले गए हक को समाज के बन्धन नहीं भाते। प्राकृतिक और सभ्य जीवन-शैली के बीच उसका रुझान प्राकृतिक की ओर है। इसलिए वह अपने दोस्त जिम के साथ मिसिसिपी नदी की रोमांचक यात्रा पर निकल जाता है।

₹ 395 HB 9788183613613

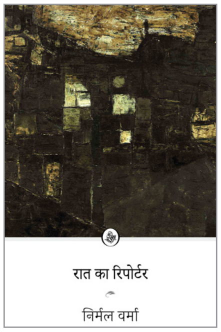

रात का रिपोर्टर (उपन्यास)

— निर्मल वर्मा

यह सम्भवत: आपातकाल के दिनों को लेकर लिखा गया हिन्दी में पहला उपन्यास है। उपन्यास का कथा-नायक रिशी यहाँ एक ऐसे पत्रकार के रूप में सामने आता है, जिसका आन्तरिक संकट उसके बाह्य सामाजिक यथार्थ से उपजा है... हालात ने उसे जैसे अस्वस्थ और शंकालु बना दिया है। उसके चारों ओर अँधेरे का साम्राज्य है और उसका अन्तर्जगत भी उसकी ज़द में है। ऐसे में यदि वह अपने इर्द-गिर्द के अँधेरे को जाँचने-परखने की कोशिश करता है, तो स्वयं भी उसकी कसौटी पर होता है।

₹ 299 PB 9789360869700

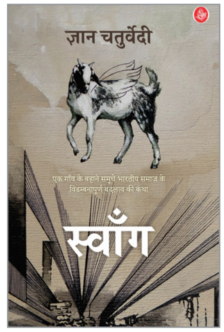

स्वाँग (उपन्यास)

— ज्ञान चतुर्वेदी

स्वाँग कभी एक बेहद लोकप्रिय लोकनाट्य विधा रही है बुंदेलखंड की। नाटक, नौटंकी, रामलीला से थोड़ी इतर। न मंच, न परदा, न ही कोई विशेष वेशभूषा। बस अभिनय। सब जानते हैं कि अभिनय है, नकली है सब, नाटक है यह; पर उस पल वह कितना जीवंत प्रतीत होता है। एकदम असल। लोकनाट्य तो ख़ैर समय के साथ डूब गए। परन्तु अब मानो हिन्दुस्तान के समूचा तंत्र ही एक विराट स्वाँग में बदल गया है।

₹ 995 HB 9788195099511

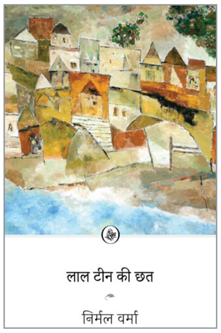

लाल टीन की छत (उपन्यास)

— निर्मल वर्मा

यह एक ऐसी अकेली लड़की की कहानी है जो अपने छोटे भाई के साथ एक पहाड़ी शहर में रहती है। वह अधिकांश समय ख़ुद अपनी सच्ची-झूठी स्मृतियों से खेलती रहती है। वह एक ऐसी सीमा पर खड़ी है, जिसके पीछे बचपन छूट चुका है और आनेवाला समय अनेक संकेतों और सन्देहों से भरा है। इन दोनों के बीच जो अँधेरी भूलभुलैया फैली है, यह उपन्यास उसके कोनों को छूता, पकड़ता, छोड़ता हुआ चलता है।

₹ 350 PB 9789360863067

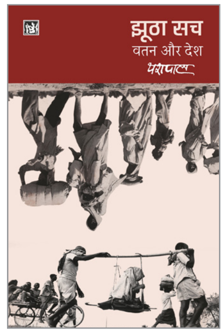

झूठा सच: वतन और देश (उपन्यास)

— यशपाल

भारत-पाकिस्तान विभाजन भारत के इतिहास का वह अध्याय है जो एक विराट त्रासदी के रूप में अनेक भारतीयों के मन पर आज भी जस-का-तस अंकित है। अपनी ज़मीनों-घरों से विस्थापित, असंख्य लोग जब नक़्शे में खींच दी गई एक रेखा के इधर और उधर की यात्रा पर निकल पड़े थे। यशपाल का यह कालजयी उपन्यास उसी ऐतिहासिक कालखंड का महाआख्यान है।

₹ 595 PB 9788180315190

नये संस्करण : अप्रैल, 2024

कन्यादान: द्विरागमन (उपन्यास)

— हरिमोहन झा

‘कन्यादान’ में मिथिला क्षेत्र में रहने वाले समाज की व्यथा को बड़े ही मार्मिक ढंग से दर्शाया गया है। जिन समस्याओं को इस उपन्यास में हरिमोहन जी ने जगह दी है, उनसे आज भी समाज मुक्त नहीं हो पाया है। इस उपन्यास का पहला संस्करण 1933 में प्रकाशित हुआ था। इस पुस्तक की महत्ता सिर्फ़ इस बात में ही नहीं है कि इसमें सामाजिक समस्याओं का यथार्थ चित्रण हुआ है बल्कि इसकी भाषा और शिल्प भी बहुत ही रोचक है।

₹ 250 PB 9788119028078

कृष्णावतार-6 महामुनि व्यास (उपन्यास)

— कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी

मूल महाभारत के रचयिता, तीर्थ-संस्कृति के जनक और ‘श्रुति’ को प्रामाणिक रूप से लिपिबद्ध करनेवाले कृष्ण द्वैपायन व्यास अपने जीवनकाल में ही एक महान धर्म-निर्माता, महामुनि, यहाँ तक कि भगवान वेदव्यास के नाम से प्रसिद्ध हो गए थे। लेकिन एक मछुवारे की कन्या के गर्भ से पैदा होकर इस महान गौरव तक वे किस प्रकार पहुँचे, इसका उल्लेख कहीं नहीं मिलता। यह उपन्यास इसी अभाव की सुन्दरतम पूर्ति है।

₹ 695 PB 9788126707614

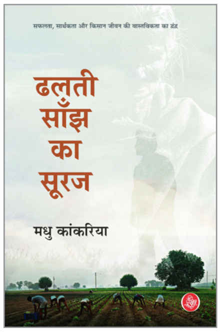

ढलती साँझ का सूरज (उपन्यास)

— मधु कांकरिया

इस उपन्यास में एक ऐसे व्यक्ति की कहानी है जो जीवन में कथित सफलता अर्जित करने के बाद उसकी सीमाओं को महसूस करता है। वह अपने जीवन के लक्ष्य की तलाश करते हुए उन गाँवों में जा पहुँचता है जहाँ क़र्ज़े की नोक पर टँगे, जीवन और व्यवस्था से हारे किसान आत्महत्या करने पर मजबूर हो रहे हैं। वह गाँव की ग़रीबी, अभाव, कुरीतियों और शोषण को देखता है और महसूस करता है कि आज गाँव की ओर देखने की कितनी ज़रूरत है।

₹ 299 PB 9789392757815

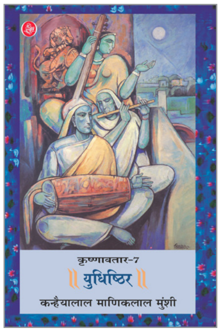

कृष्णावतार-7 युधिष्ठिर (उपन्यास)

— कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी

सुविख्यात गुजराती उपन्यासकार कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी की बहुचर्चित और बहुपठित उपन्यास-माला ‘कृष्णावतार’ के छह खंडों—‘बंसी की धुन’, ‘रुक्मिणी हरण’, ‘पाँच पाण्डव’, ‘महाबली भीम’, ‘सत्यभामा’ तथा ‘महामुनि व्यास’—के बाद ‘युधिष्ठिर’ नामक यह सातवाँ खंड है। साथ ही आठवाँ, किन्तु अधूरा खंड ‘कुरुक्षेत्र’ भी। इस उपन्यास में युधिष्ठिर के अन्तर्द्वन्द्व और बेचैनी का मार्मिक अंकन हुआ है। ‘महाभारत’ में युधिष्ठिर ‘धर्मराज’ के रूप में विख्यात इतिहासपुरुष हैं। वनवास और अज्ञातवास के बावजूद अन्ततः उन्हें ‘कुरुक्षेत्र’ जाना पड़ा।

₹ 895 HB 9788171788774

स्वामी (उपन्यास)

— मन्नू भंडारी

आत्मीय रिश्तों के बीच जिस सघन अन्तर्द्वन्द्व का चित्रण करने के लिए मन्नू भंडारी सुपरिचित हैं, उसका उत्कृष्ट रूप ‘स्वामी’ में देखा जा सकता है। यह उनका भावप्रवण विचारोत्तेजक उपन्यास है। सामाजिक और पारिवारिक परिस्थितियों के साथ ही उपन्यास में ऐसे प्रश्न भी उठाए गए हैं जिनकी वर्तमान में प्रासंगिकता स्वयंसिद्ध है। यह एक पठनीय और संग्रहणीय उपन्यास है।

₹ 495 HB 9788183616188

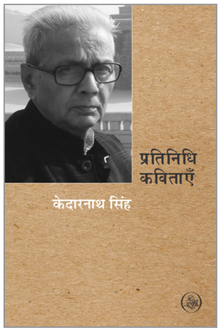

प्रतिनिधि कविताएँ (कविता)

— केदारनाथ सिंह

केदारनाथ सिंह शायद हिन्दी के समकालीन काव्य-परिदृश्य में अकेले ऐसे कवि हैं, जो एक ही साथ गाँव के भी कवि हैं और शहर के भी। अनुभव के ये दोनों छोर कई बार उनकी कविता में एक ही साथ और एक ही समय दिखाई पड़ते हैं। केदारनाथ सिंह की कविताएँ समय में देर तक टिकनेवाली कविताएँ हैं। केदार की कविता किसी अर्थ में एकालाप नहीं, वह हर हालत में एक सार्थक संवाद है।

₹ 199 PB 9788126719495

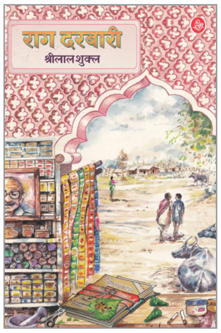

राग दरबारी (उपन्यास)

— श्रीलाल शुक्ल

यह एक ऐसा उपन्यास है जो गाँव की कथा के माध्यम से आधुनिक भारतीय जीवन की मूल्यहीनता को सहजता और निर्ममता से अनावृत्त करता है। शुरू से आख़िर तक इतने निस्संग और सोद्देश्य व्यंग्य के साथ लिखा गया हिन्दी का शायद यह पहला बृहत् उपन्यास है। इसका सम्बन्ध एक बड़े नगर से कुछ दूर बसे हुए गाँव की ज़िन्दगी से है, जो इतने वर्षों की प्रगति और विकास के नारों के बावजूद निहित स्वार्थों और अनेक अवांछनीय तत्त्वों के सामने घिसट रही है।

₹ 995 HB 9788126713882

न्यूनतम मैं (कविता)

— गीत चतुर्वेदी

गीत चतुर्वेदी ने अपने गल्प व कविताओं में अवां-गार्द भाव दिखाया है। उनका अध्ययन बेहद विस्तृत है जो कि उनकी पीढ़ी के लिए एक दुर्लभ बात है। यह पढ़ाई उनकी रचनाओं में अनायास और सहज रूप से गुँथी दिखती है। उनकी भाषा व शैली अभिनव है। उनके पास सुलझी हुई दृष्टि है, जिसमें क्लीशे नहीं और जो कि वर्तमान विचारधारात्मक खेमों के शिकंजे में भी फँसी हुई नहीं है।

₹ 250 PB 9789389598681

सांध्यगीत (कविता)

— महादेवी वर्मा

'सांध्यगीत' में कुछ स्फुट गीत संगृहीत हैं। 'सांध्यगीत' मेरी उस मानसिक स्थिति को व्यक्त कर सकेगा जिसमें अनायास ही मेरा हृदय सुख-दु:ख में सामंजस्य का अनुभव करने लगा। मेरे गीत मेरा आत्म-निवेदन मात्र है—इनके विषय में कुछ कह सकना मेरे लिए सम्भव नहीं है! इन्हें मैं अपने उपहार के योग्य अकिंचन भेंट के अतिरिक्त और कुछ नहीं मानती।

—महादेवी वर्मा

₹ 495 HB 9788180311208

रेणुका (कविता)

— रामधारी सिंह दिनकर

दिनकर बन्धनों और रूढ़ियों से मुक्त अपनी राह के कवि हैं। इसलिए उन्हें स्वच्छन्दतावाद के कवि के रूप में भी रेखांकित किया गया। 'रेणुका' में इसकी स्पष्ट झलक मिलती है। 'रेणुका' की कविताएँ भिन्न-भिन्न स्वरों की होते हुए भी अपनी जातीय सोच और संवेदना में बृहद् कैनवस लिये हैं। इस संग्रह के बग़ैर दिनकर का ही नहीं, उनके युग का भी सही आकलन सम्भव नहीं।

₹ 395 HB 9788180313547

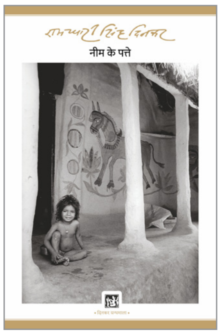

नीम के पत्ते (कविता)

— रामधारी सिंह दिनकर

इस संग्रह में संकलित कविताएँ तत्कालीन राजनीतिक परिस्थितियों की उपज हैं; साथ ही दिनकर की जनहित के प्रति प्रतिबद्ध मानसिकता की साक्ष्य भी। अपने दौर के कटु यथार्थ से अवगत करानेवाला ओजस्वी कविताओं का यह संग्रह दिनकर के काव्य-प्रेमियों के साथ-साथ शोधार्थियों के लिए भी महत्त्वपूर्ण है, संग्रहणीय है।

₹ 250 HB 9789388211987

साकेत (कविता)

— मैथिलीशरण गुप्त

यह राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की वह अमर कृति है जिसे वे अपने साहित्यिक जीवन की अन्तिम रचना के रूप में पूरी करना चाहते थे। उनकी इस इच्छा के अनुरूप 'साकेत' वास्तविक अर्थों में उनकी अमर रचना बन गई। इस कृति में समस्त मानवीय संवेदनाओं की अनुभूति पाठक को होती है। इस कृति में उर्मिला के विरह का जो चित्रण गुप्त जी ने किया है, वह अत्यधिक मार्मिक और गहरी मानवीय संवेदनाओं और भावनाओं से ओत-प्रोत है।

₹ 399 PB 9788180317293

हुंकार (कविता)

— रामधारी सिंह दिनकर

'हुंकार' में इस शीर्षक से कोई कविता नहीं है, लेकिन हर कविता एक हुंकार है। काव्य में ओज को कलात्मक रूप देनेवाले कवि हैं दिनकर। उन्होंने अपने काव्य में राष्ट्रीय अस्मिता की वह ज़मीन तैयार की, जिससे स्वतंत्रता का मार्ग प्रशस्त हो सके। इस संग्रह में दिनकर की दृष्टि वैश्विक है। 'हुंकार' क्रान्ति को एक नया रूप देनेवाला ऐसा संग्रह है जो आठ दशकों से विद्रोह की आवाज़ बना हुआ है, सपनों की राह और रोशनी बना हुआ है।

₹ 495 HB 9788180313561

सुरंग (कहानी)

— संजय सहाय

यह ऐसी कहानियों का संग्रह है जहाँ हर कहानी में मनुष्य जाति का कोई न कोई ज़ख़्म और कोहराम है। यही कारण है कि अपने प्रकाशन के क़रीब दो दशक बाद आज भी ये कहानियाँ प्रासंगिक और समकालीन हैं, बल्कि कई अर्थ में पहले से भी अधिक। 'सुरंग' की कहानियाँ ऐसी हैं जो कभी-कभी रची जा पाती हैं लेकिन लम्बे वक़्त के लिए साथ रह जाती हैं।

₹ 250 PB 9789387462397

बापू (कविता)

— रामधारी सिंह दिनकर

राष्ट्र पिता गाँधी को लेकर लिखी गई इस पुस्तक में दिनकर जी लिखते है: यह छोटी-सी पुस्तक विराट् के चरणों में वामन का दिया हुआ क्षुद्र उपहार है। साहित्य-कला से परे, इसका एकमात्र महत्त्व भी इतना ही है। आशा है, बापू के दर्शक, प्रशंसक और भक्त इस तुकबन्दी में अपने हृदय के भावों का कुछ प्रतिबिम्ब अवश्य पाएंगे इति।

₹ 350 HB 9789360863067

लावारिस नहीं मेरी माँ है! (कहानी)

— अनिल कुमार पाठक

यद्यपि यह लेखक का प्रथम कहानी-संग्रह है किन्तु कथ्य की इस विधा में लेखक लम्बे समय से सक्रिय हैं। इनकी कहानियाँ कई दशक पूर्व से आकाशवाणी के विभिन्न केन्द्रों से प्रसारित हो रही हैं। इन कहानियों में एक ओर जहाँ सहजता एवं सरसता है वहीं दूसरी ओर इनकी क़िस्सागोई पाठकों को आद्योपान्त बाँधकर रखने में भी सक्षम है। प्रस्तुत संग्रह में कुल 11 कहानियाँ हैं।

₹ 395 HB 9789391950620

नये संस्करण : अप्रैल, 2024

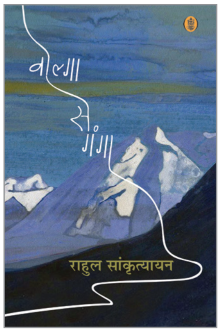

वोल्गा से गंगा (कहानी)

— राहुल सांकृत्यायन

यह ऐसी बीस ऐतिहासिक कहानियों का संकलन है जिनमें आर्यों के आठ हजार साल के इतिहास को कालानुक्रम से अंकित किया गया है। इन कहानियों में मातृसत्तात्मक समाज-व्यवस्था को पितृसत्तात्मक व्यवस्था में बदलने की प्रक्रिया भी दृष्टिगोचर होती है और आर्यों की यूरेशिया से वोल्गा तथा उसके बाद गंगा तक की यात्रा की रूपरेखा भी पता चलती है। इन कहानियों में ई.पू. 6000 से लेकर 1942 ई. तक के कालखंड को कड़ी-दर-कड़ी प्रस्तुत किया गया है।

₹ 299 PB 9788119092338

हिन्दी नाटक (आलोचना)

— बच्चन सिंह

इस पुस्तक में समीक्षा-पद्धतियों को अस्वीकार करते हुए पूर्व-पश्चिम की नवीनतम विकसित समीक्षा-सरणियों का आश्रय लिया गया है। लेखक का केन्द्रीय विवेच्य है नाटक की नाट्यमानता। नाटक की भाषा हरकत की भाषा होती है, क्रियात्मकता की भाषा होती है। इसी से नाटक को विशिष्ट रूप मिलता है और वह सामाजिक-सांस्कृतिक सरोकारों को उजागर करती है। हिन्दी के कुछ शिखरों–*अंधेर नगरी, स्कन्दगुप्त, ध्रुवस्वामिनी, अंधा-युग, लहरों के राजहंस, आधे-अधूरे* पर विशेष ध्यान दिया गया है जो आज भी महत्त्वपूर्ण और प्रासंगिक हैं।

₹ 895 HB 9788171193455

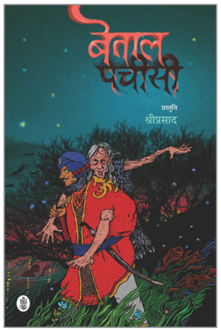

बेताल पचीसी (कहानी)

— श्रीप्रसाद

यह किताब विरल क़िस्सागोई का अन्यतम उदाहरण है। ये कहानियाँ न सिर्फ़ मनोरंजक, रोचक और रोमांचक हैं बल्कि एक तरह की नैतिक-शिक्षा भी प्रदान करती हैं। ख़ासकर किशोर उम्र के पाठकों के मन में नैतिकता और नागरिक मूल्य-बोध के विकास में ये कहानियाँ बेहद सफल हैं और उनके स्वस्थ मनोरंजन का साधन भी। डॉ. श्रीप्रसाद ने इन कहानियों को बेहद रोचक भाषा और प्रवाह में प्रस्तुत किया है।

₹ 199 PB 9789391950101

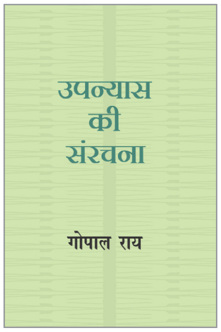

उपन्यास की संरचना (आलोचना)

— गोपाल राय

हिन्दी आलोचना उपन्यास की ओर विगत कुछ दशकों से ही उन्मुख हुई है। पर आलोचकों की दृष्टि जितनी उसके कथ्य पर रही है, उतनी उसकी संरचना पर नहीं। उपन्यास किस प्रकार 'बनता' है, पाठक की चेतना में वह कैसे 'रूप' ग्रहण करता है, इस किताब में इसी की तलाश लेखक का उद्देश्य है। औपन्यासिक संरचना का सैद्धान्तिक विवेचन करने के साथ ही इस पुस्तक में लगभग दो दर्जन हिन्दी उपन्यासों की संरचना का सविस्तार विवेचन किया गया है। हिन्दी में उपन्यास की संरचना के विवेचन का यह पहला गम्भीर प्रयास है।

₹ 1295 HB 9788126710867

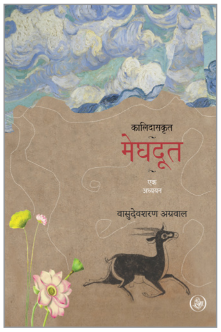

कालिदासकृत मेघदूत (आलोचना)

— वासुदेवशरण अग्रवाल

महाकवि कालिदास की कालजयी कृति 'मेघदूत' सदियों से प्रेम और विरह की श्रेष्ठ अभिव्यक्ति के रूप में समादृत रही है। संस्कृत साहित्य में 'उपमा कालिदासस्य' प्रसिद्ध उक्ति है ही और इस कृति में कालिदास की रचनात्मकता शिखर पर है। इसीलिए 'मेघदूत' शताब्दियों से काव्य का प्रतिमान रहा है। अरसे से अनुपलब्ध इस कृति का प्रकाशन काव्य-रसिकों के लिए उल्लास का अवसर है।

₹ 695 HB 9788171786091

परम्परा का मूल्यांकन (आलोचना)

— रामविलास शर्मा

बिना साहित्यिक परम्परा को समझे न तो प्रगतिशील आलोचना और साहित्य की रचना हो सकती है और न ही अपनी ऐतिहासिक परम्परा से अलग रहकर कोई बड़ा सामाजिक बदलाव सम्भव है। लेकिन परम्परा में जो उपयोगी और सार्थक है, उसे उसका मूल्यांकन किए बिना नहीं अपनाया जा सकता। यह पुस्तक परम्परा के इसी उपयोगी और सार्थक की तलाश का प्रतिफलन है।

₹ 795 HB 9788126704422

कविता के नए प्रतिमान (आलोचना)

— नामवर सिंह

इस किताब में समकालीन हिन्दी आलोचना के अन्तर्गत व्याप्त मूल्यान्ध वातावरण का विश्लेषण करते हुए उन काव्यमूल्यों को रेखांकित करने का प्रयास किया गया है जो आज की स्थिति के लिए प्रासंगिक हैं। इस प्रक्रिया में यथाप्रसंग कुछ कविताओं की संक्षिप्त अर्थमीमांसा भी की गई है, जिनसे लेखक द्वारा समर्थित काव्य-मूल्यों की प्रतीति होती है।

₹ 895 HB 9788126707447

हिन्दी कहानी का इतिहास -1 (आलोचना)

— गोपाल राय

यह हिन्दी कहानी का पहला व्यवस्थित इतिहास है और हिन्दी-उर्दू का पहला समेकित इतिहास तो यह है ही। उल्लेखनीय है कि इस अवधि के अनेक कहानीकार एक साथ हिन्दी और उर्दू दोनों भाषाओं में लिख रहे थे। इस किताब में उर्दू-हिन्दी और मैथिली-भोजपुरी-राजस्थानी के लगभग 100 कहानी-लेखकों और 3000 कहानियों का कमोबेश विस्तार के साथ विवेचन या उल्लेख किया गया है। इसके साथ ही जो कहानियाँ किसी भी कारण चर्चित रही हैं, या उल्लेखनीय हैं, उनकी अक्षरानुसार सूची भी उपलब्ध करा दी गई है।

₹ 1295 HB 9788126716289

नये संस्करण : अप्रैल, 2024

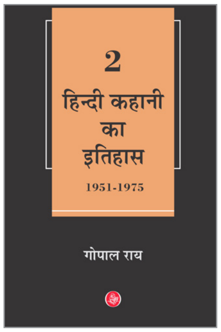

हिन्दी कहानी का इतिहास -2 (आलोचना)

— गोपाल राय

यह किताब हिन्दी कहानी के इतिहास दूसरा खंड है जिसमें 1951-75 का इतिहास पेश किया गया है। इस पुस्तक में उर्दू-हिन्दी और मैथिली-भोजपुरी-राजस्थानी के लगभग 300 कहानी लेखकों और 5000 से अधिक कहानियों का कमोबेश विस्तार के साथ विवेचन या उल्लेख किया गया है। इसके पहले किसी इतिहास-ग्रन्थ में इतनी संख्या में कहानीकारों और कहानियों का उल्लेख उपलब्ध नहीं है।

₹ 1395 HB 9788126720552

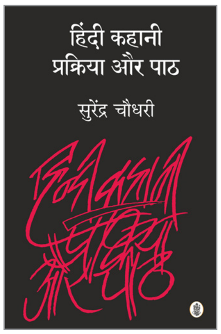

हिंदी कहानी: प्रक्रिया और पाठ (आलोचना)

— सुरेंद्र चौधरी

हिन्दी कहानी की रचना-प्रक्रिया पर यह एक मुकम्मल किताब है। कहानी को रचनाकर्म के साथ-साथ जीवन से जुड़ा मानकर लेखक एक निरन्तरता में इन्हें देखने की चेष्टा करता है। बदलती हुई प्रवृत्तियों और प्रक्रियाओं को वह इसका बाधक भी नहीं मानता है। उसका विश्वास है कि अनुभव की संश्लिष्टता ही रचना में आकर अपना अर्थ भी खोलती है और स्वयं उस अनुभव को भी बड़ा बनाती है। अपनी प्रथम पुस्तक में उसकी यह शुरुआत हिन्दी आलोचना में चर्चा का विषय बन गई थी।

₹ 595 HB 9788171192465

छायावाद (आलोचना)

— नामवर सिंह

इस पुस्तक में छायावाद की काव्यगत विशेषताओं को स्पष्ट करते हुए छाया-चित्रों में निहित सामाजिक सत्य का उद्घाटन किया गया है। छायावाद पर अनेक पुस्तकों के रहते हुए भी यह पुस्तक दृष्टि की मौलिकता; विवेचन की स्पष्टता तथा आलोचना-शैली की सर्जनात्मकता के लिए लोकप्रिय रही है। प्रस्तुत पुस्तक में कुल बारह अध्याय हैं जिनमें छायावाद के काव्य-सौंदर्य का विवेचन किया गया है।

₹ 695 HB 9788126707355

महावीरप्रसाद द्विवेदी और हिन्दी नवजागरण (आलोचना)

— रामविलास शर्मा

इस पुस्तक के पाँच भाग हैं। पहले भाग में भारत और साम्राज्यवाद के सम्बन्ध में द्विवेदी जी ने और 'सरस्वती' के लेखकों ने जो कुछ कहा है, उसका विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। दूसरे भाग में रूढ़िवाद से संघर्ष, वैज्ञानिक चेतना के प्रसार और प्राचीन दार्शनिक चिन्तन के मूल्यांकन का विवेचन है। तीसरे भाग में भाषा-समस्या को लेकर द्विवेदी जी ने जो कुछ लिखा है, उसकी छानबीन की गई है। चौथे भाग में साहित्य-सम्बन्धी आलोचना का परिचय दिया गया है। पाँचवें भाग में द्विवेदी-युग के साहित्य की कुछ विशेषताओं की ओर संकेत किया गया है।

₹ 1395 HB 9788126703753

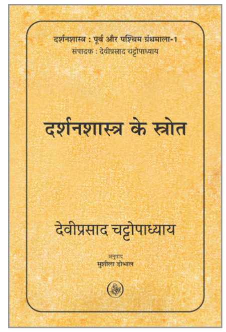

दर्शनशास्त्र के स्रोत (दर्शनशास्त्र)

— देवीप्रसाद चट्टोपाध्याय

विश्व-दर्शन की मुख्य धारा में विभिन्न कालों के विभिन्न लोगों ने सकारात्मक या नकारात्मक, अपने-अपने तरीक़े से योगदान किया है। इस मुख्य धारा में अनेक धाराएँ मिली हुई हैं, जिनसे सामान्य पाठकों का परिचय कराने के लिए आठ पुस्तकों की यह शृंखला तैयार की गई है। प्रो. देवीप्रसाद चट्टोपाध्याय की प्रस्तुत पुस्तक इसी शृंखला की पहली कड़ी है।

₹ 250 PB 9789394902923

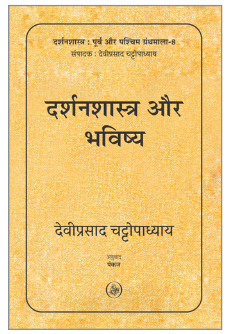

दर्शनशास्त्र और भविष्य (दर्शनशास्त्र)

— देवीप्रसाद चट्टोपाध्याय

'दर्शनशास्त्र : पूर्व और पश्चिम' पुस्तकमाला की इस आठवीं और अंतिम कड़ी में प्रो. देवीप्रसाद चट्टोपाध्याय ने संपूर्ण पुस्तकमाला का विहगावलोकन किया है और उन पर अपनी सारगर्भित टिप्पणियाँ प्रस्तुत की हैं। अंत में उन्होंने इस प्रश्न पर विस्तारपूर्वक विचार किया है कि मनुष्य का भविष्य दर्शनशास्त्र के भविष्य से किस प्रकार जुड़ा हुआ है। यह पुस्तक दर्शनशास्त्र की न केवल रोचक बल्कि प्रामाणिक और सटीक पाठ्य सामग्री प्रस्तुत करती है।

₹ 250 PB 9789394902992

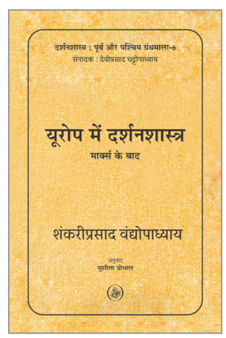

यूनान में दर्शनशास्त्र (दर्शनशास्त्र)

— शंकरीप्रसाद वंद्योपाध्याय

इस पुस्तक में यूरोपीय दर्शनशास्त्र के हेगेल और मार्क्स के बाद के इतिहास पर विचार किया गया है। एक प्रकार से यह विवेचन व्यवहार-केंद्रित होने की अपेक्षा विचार-केंद्रित अधिक है। दूसरे शब्दों में, मुख्य ध्यान इस सैद्धांतिक पक्ष पर है कि हेगेल के दर्शनशास्त्र का विकास आगे चलकर किस प्रकार हुआ और उस पर दर्शनशास्त्रियों की क्या प्रतिक्रियाएँ रहीं। 'यूरोप में दर्शनशास्त्र : मार्क्स के बाद' पुस्तक में इन सभी धाराओं और विचार-सरणियों का विस्तारपूर्वक विवेचन किया गया है।

₹ 250 PB 9789394902978

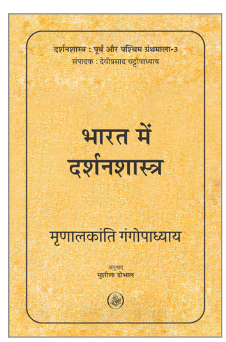

भारत में दर्शनशास्त्र (दर्शनशास्त्र)

— मृणालकांति गंगोपाध्याय

ऋग्वैदिक काल से लेकर ईसा की पहली शताब्दी तक लगभग डेढ़ हज़ार वर्ष के दौरान भारतीय दर्शन में ईश्वरवादी-विचारवादी चिन्तन से लेकर लोकायत जैसी भौतिकवादी दार्शनिक धाराएँ देखने को मिलती हैं। प्रस्तुत पुस्तक में विद्वान लेखक ने इन समस्त धाराओं का मन्थन करते हुए भारतीय दर्शन की प्रकृति और अन्तर्वस्तु का यथार्थवादी परिचय दिया है। भारतीय विचारकों ने दर्शन की महत्त्वपूर्ण समस्याओं पर अपने-अपने तरीक़े से जो तर्क-वितर्क किया था, उसकी विवेचना भी प्रस्तुत पुस्तक में है।

₹ 250 PB 9789394902947

नये संस्करण : अप्रैल, 2024

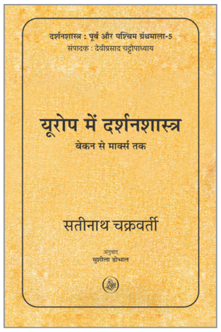

यूरोप में दर्शनशास्त्र (दर्शनशास्त्र)

— सतीनाथ चक्रवर्ती

यह पुस्तक पुनर्जागरण एवं आधुनिक विज्ञान के उदय की चर्चा से प्रारम्भ होती है, और उस कालखंड की दार्शनिक प्रवृत्तियों का विवेचन प्रस्तुत करती है, जो आधुनिक यूरोपीय दर्शनशास्त्र के इतिहास में अत्यन्त विचारोत्तेजक माना जाता है। इसमें कई ऐसे विषयों पर भी विचार किया गया है, जिन पर अभी तक यूरोपीय दर्शनशास्त्र के अध्ययन में ध्यान नहीं दिया गया था। यह पुस्तक वैज्ञानिक विचारधारा और विज्ञान एवं समाज के अन्तस्सम्बन्धों को समझने के लिए पठनीय है।

₹ 250 PB 9789394902961

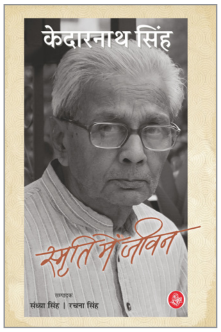

स्मृति में जीवन (संस्मरण)

— केदारनाथ सिंह

संस्मरणों की इस कृति की रूपरेखा स्वयं कवि केदारनाथ सिंह ने तैयार कर दी थी जो अब पाठकों के सामने है। यहाँ कवि का अपना जीया-देखा समय-समाज है तो अनेक विभूतियों के अंतरग और हार्दिक चित्र भी। कवि की दृष्टि उन लोगों पर भी गई है जो भले ही बड़े नाम नहीं लेकिन उनके किसी विशिष्ट गुण अथवा गतिविधि ने कवि के मन में स्थायी आवास बना लिया। इस संग्रह में पिछली पीढ़ी के अनेक लेखकों के साथ कवि के सहचर रहे लेखकों के भी संस्मरण संकलित हैं।

₹ 250 PB 9789392757983

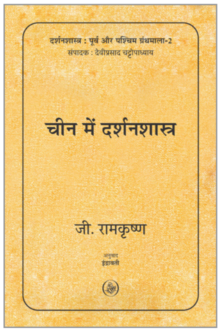

चीन में दर्शनशास्त्र (दर्शनशास्त्र)

— जी. रामकृष्ण

चीन में दर्शन की परम्परा यों तो बहुत पुरानी है, लेकिन ईसा-पूर्व की पाँचवीं से तीसरी शताब्दी का काल दार्शनिक चिन्तन की दृष्टि से समृद्धि का काल माना जाता है। कन्फ्यूशियस का चिन्तन इसी काल की देन है। तब से लेकर कुछ शताब्दी पहले तक इस देश में अनेक दार्शनिक मतवाद अस्तित्व में आए। प्रस्तुत पुस्तक में इन सभी मतवादों की पृष्ठभूमि स्पष्ट करने के लिए अनेक सदियों के कालक्रम में चीन के राजवंशों की एक संक्षिप्त रूपरेखा दी गई है।

₹ 250 PB 9789394902930

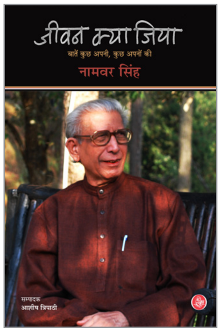

जीवन क्या जिया (संस्मरण)

— नामवर सिंह

नामवर सिंह ने आत्मकथा नहीं लिखी, इसके बावजूद उनकी आत्मकथा अंशों में प्रकाशित होती रही। इस पुस्तक में उनके वाचिक के ऐसे अंशों को एकत्र और क्रमबद्ध किया गया है कि उसे व्यवस्थित रूप में पढ़ा जा सके। बचपन के दिनों से लेकर आखिर दिनों तक की सिलसिलेवार स्मृतियाँ इसमें मौजूद हैं। नामवर जी के रोजमर्रा के जीवन को समझने के दृष्टिकोण से इसमें डायरी का एक अंश भी प्रस्तुत है।

₹ 399 PB 9788119159208

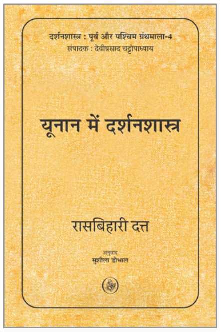

यूनान में दर्शनशास्त्र (दर्शनशास्त्र)

— रासबिहारी दत्त

इस पुस्तक में यूनानी दर्शन की कहानी वहाँ के दर्शनशास्त्रियों और उनके कुछ सर्वश्रेष्ठ टीकाकारों के शब्दों में ही इस प्रकार प्रस्तुत करने की कोशिश की गई है कि जिससे प्राचीन यूनान में दर्शन की स्थिति की एक सटीक तस्वीर अपनी पूरी विविधता और समृद्धि के साथ सामने आ सके। यह एक ऐसा प्रयोग है, जिसने इस पुस्तक को स्वयं यूनानी दर्शनशास्त्रियों द्वारा अभिव्यक्त यूनानी जीवन-दर्शन की वैज्ञानिक विवेचनाओं का संग्रह बना दिया है।

₹ 250 PB 9789394902954

यादों का लाल गलियारा: दंतेवाड़ा (संस्मरण)

— रामशरण जोशी

यह पुस्तक जिन्दा यादों की एक विरल गाथा है। उन ज़िन्दा यादों की जिनमें हरे-भरे कैनवस पर ख़ून के छींटे दूर-दूर तक सवालों की तरह दिखाई देते हैं। यह पुस्तक राजसत्ता और वैश्विक नव-उपनिवेशवादी चरित्र से न सिर्फ़ नक़ाब हटाती है बल्कि आदिवासियों यानी हाशिए के संघर्ष का वैज्ञानिक विश्लेषण भी करती है। यह पुस्तक हाशिए का विमर्श ही नहीं, हाशिए का विकल्प-पाठ भी प्रस्तुत करती है।

₹ 299 PB 9788126727971

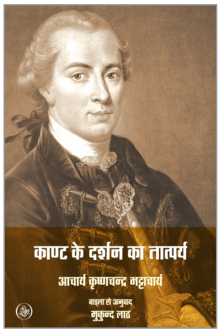

काण्ट के दर्शन का तात्पर्य (दर्शनशास्त्र)

— आचार्य कृष्णचन्द्र भट्टाचार्य

प्रस्तुत पुस्तक में आचार्य कृष्णचन्द्र भट्टाचार्य ने काण्ट के दर्शन का नितान्त स्वतंत्र स्थापन-प्रतिपादन किया है जो अपनी तरह से विलक्षण है। इसके लिए लेखक ने भाषा भी अपनी ही ली है।

₹ 895 HB 9788126707447

पथ के साथी (संस्मरण)

— महादेवी वर्मा

महादेवी जी ने अपने कुछ समकालीनों के संस्मरण रूपी व्यक्ति-चित्र इस तरह प्रस्तुत किए हैं जिनमें उनके साथियों के आन्तरिक व्यक्तिबोध को गहराई से पहचाना और समादृत किया गया है। यही कारण है कि महादेवी जी के स्मृति विधान ने जो आकृतियाँ प्रस्तुत की हैं वे जीवन्त मनुष्य की तरह पाठकों के साथ अब तक बनी रही हैं और आगे भी बनी रहेंगी।

₹ 199 PB 9788180313028

भारत का इतिहास (इतिहास)

— रोमिला थापर

प्रस्तुत पुस्तक में लगभग 1000 ई.पू. में आर्य संस्कृति की स्थापना से लेकर 1526 ई. में मुग़लों के आगमन और यूरोप की व्यापारिक कम्पनियों के प्रथम साक्षात्कार तक प्राय: 2500 वर्षों के दौरान भारत के आर्थिक तथा सामाजिक ढाँचे का विकास प्रमुख राजनीतिक एवं राजवंशीय घटनाओं के प्रकाश में दर्शाया गया है। मुख्य रूप से डॉ. थापर ने धर्म, कला और साहित्य में, विचारधाराओं और संस्थाओं में व्यक्त होनेवाले भारतीय संस्कृति के विविध रूपों का रोचक वर्णन किया है।

₹ 995 HB 9788126705689

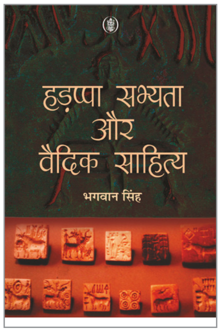

हड़प्पा सभ्यता और वैदिक साहित्य (इतिहास)

— भगवान सिंह

1987 में इस पुस्तक के प्रकाशन से पहले तक न तो इतिहास को अपना पुरातत्त्व मिल रहा था, न पुरातत्त्व को अपना इतिहास। इसके प्रकाशन के बाद भारतीय पुरातत्त्व में पुरातात्त्विक सामग्री को साहित्य से जोड़कर भी देखने का आरम्भ हुआ। इस अर्थ में इसे एक युगान्तरकारी कृति के रूप में स्वीकार किया गया। हड़प्पा सभ्यता का वैभव और वैदिक साहित्य की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को समझने की दृष्टि से यह पुस्तक अनन्य है।

₹ 1495 PB 9788171193011

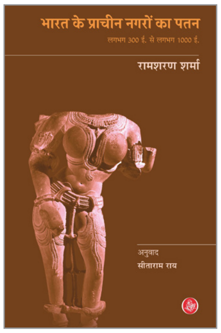

भारत के प्राचीन नगरों का पतन (इतिहास)

— रामशरण शर्मा

यह कृति पुरातात्त्विक साक्ष्यों के आधार पर प्राचीन काल के अन्तिम और मध्यकाल के प्रारम्भिक चरण में भारतीय नगरों के पतन और उजड़ते जाने का विवेचन करती है। लेखक के अनुसार नगर-जीवन के लोप होने के कारणों में साम्राज्यों का पतन तो है ही, सामाजिक अव्यवस्था और दूरवर्ती व्यापार का सिमट जाना भी है। यह कृति नगर-जीवन के ह्रास और शासकीय अधिकारियों, पुरोहितों, मन्दिरों एवं मठों को मिलनेवाले भूमि-अनुदानों के बीच सम्बन्ध-सूत्रों की भी तलाश करती है।

₹ 399 PB 9789395737593 | ₹ 995 HB 9788126700752

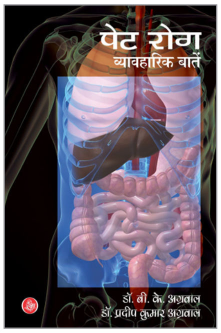

पेट रोग: व्यावहारिक बातें (स्वास्थ्य)

— डॉ. बी. के. अग्रवाल ● डॉ. प्रदीप कुमार अग्रवाल

इस पुस्तक के माध्यम से पेट के रोगों के आधुनिक विचारों पर एक विहंगम दृष्टि डालने का प्रयास किया गया है। पेट के रोगों की वर्तमान अवधारणा तथा उनके आधुनिक इलाज की समझ एवं जानकारी ही आम जनता को भटकने से बचा सकती है। इस पुस्तक का उद्देश्य आम जनता को सरल एवं व्यावहारिक बातें बताना है जिससे वे रोज़मर्रा की ज़िन्दगी में पेट रोगों से बच सकें एवं स्वस्थ जीवन जी सकें।

₹ 150 PB 9788126719440

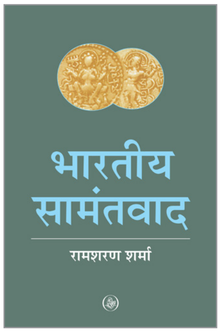

भारतीय सामंतवाद (इतिहास)

— रामशरण शर्मा

प्रस्तुत पुस्तक में प्रो. शर्मा ने भारतीय सामंतवाद के जन्म से लेकर उसके प्रौढ़ होने तक प्राय: नौ सौ वर्षों के इतिहास का विवेचन किया है, जिसके दायरे में उन्होंने अनेक समस्याएँ उठाई हैं और कालान्तर में उनके विशद विवेचन का मार्ग प्रशस्त किया है। क्षेत्र की दृष्टि से उनका यह अध्ययन मुख्यत: उत्तर भारत तक सीमित है और इसमें उन्होंने सामंतवाद के राजनीतिक तथा आर्थिक पहलुओं पर ही विशेष रूप से विचार किया है।

₹ 995 HB 9788171782826

रोगों की अचूक चिकित्सा (स्वास्थ्य)

— जानकीशरण वर्मा

यह किताब प्रत्येक मनुष्य के लिए एक बेहद जरूरी किताब है। इस किताब में विभिन्न बीमारियों का बहुत इलाज बहुत ही सरल ढंग से समझाने का प्रयास किया गया। अचूक चिकित्सा के सिद्धान्त बहुत सरल है, लेकिन प्रकृति से दूर हो जाने के कारण हम उसे जल्दी नहीं समझ पाते। इसका ध्यान रखते हुए इस किताब में एक-एक बात को कई बार दुहराया गया है। कोशिश यह की गई है कि साधारण ज्ञानवाले लोग भी सभी बातों को अच्छी तरह समझ जायें।

₹ 350 PB 9789389243550

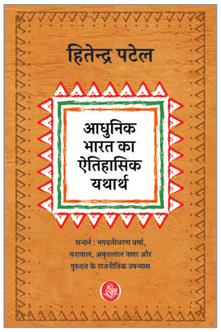

आधुनिक भारत का ऐतिहासिक यथार्थ (आलोचना)

— हितेन्द्र पटेल

बीसवीं सदी में अनेक ऐसे उपन्यास लिखे गए जिनमें अपने समय की राजनीति को तत्कालीन सामाजिक सन्दर्भों के साथ अंकित किया गया। इस पुस्तक में ऐसे ही उपन्यासों को आधार बनाकर 1919 से लेकर 1962 तक की भारतीय राजनीति को समझने की कोशिश की गई है। इस अध्ययन में उन्हीं उपन्यासों को रखा गया है जिनमें स्वतंत्रता आन्दोलन के इस शिखर-काल, गांधी और आजादी के बाद नेहरू के युग को गम्भीरतापूर्वक देखा, समझा और प्रस्तुत किया गया है।

₹ 499 PB 9789392757952

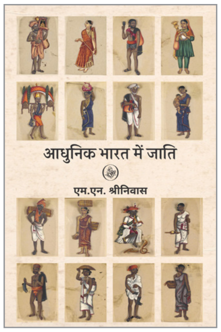

आधुनिक भारत में जाति (समाजशास्त्र)

— एम. एन. श्रीनिवास

भारतीय समाजशास्त्रियों ने जाति-व्यवस्था के जटिल तथ्यों को 'वर्ण' की मर्यादाओं में समझने की भूल और जिसके चलते सामाजिक संरचना का अध्ययन सतही हो गया। गत सौ-डेढ़ सौ वर्षों के दौरान जाति-व्यवस्था का असर कई नए-नए कार्यक्षेत्रों में विस्तृत हुआ है और उसकी ऐतिहासिक व मौजूदा तंत्र की नितान्त नए दृष्टिकोण से विश्लेषण करने की माँग एम.एन. श्रीनिवास करते हैं। अथक अध्ययन और शोध के परिणामस्वरूप एम.एन. श्रीनिवास के निबन्ध आकार ग्रहण करते हैं।

₹ 795 HB 9788126701254

चर्चा में किताब

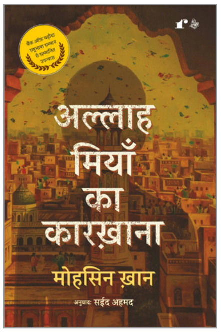

सईद अहमद द्वारा अनूदित 'अल्लाह मियाँ का कारख़ाना' मोहसिन ख़ान का मुकम्मल परिचय है। कमाल की भाषा। बच्चे-सी सरल, दुनियावी बनावट से दूर, एक-एक शब्द पानी के तरह साफ़ मगर उस शब्द के अर्थ बहुत गहरे, चप्पल जैसे पाठक की ही टूट गई हो, कपड़े सेंता के जैसे पाठक ने ही रखे हों। पतंग, मुर्गी, अंडे, चूजे, तितली, बकरी जैसे पाठक ही बचपन की स्मृतियों में घुसकर गोल-गोल चक्कर लगा रहा हो। निम्नवर्गीय मुस्लिम समाज की मुश्किलों, विडंबनाओं और देश की सांप्रदायिक/ फासिस्ट नीतियों को, राज्य के इशारे पर चलने वाली पुलिस की असंवेदनशील कार्यशैली को जिस तरह से इस उपन्यास में बुना गया है, वह हिला देने वाला है। कैसे एक ज़रा-सी घटना के बाद एक परिवार पूरी तरह तबाह हो गया। पिता जेल चले गए। माँ मर गई। बच्चे अनाथ हो गए। माँ के मरने से याद आया लेखक ने एक जगह लिखा है- "माँ के मरने का ग़म क्या होता है ये वही जान सकता है जिसकी माँ मर गई हो।" हम कितनी भी संवेदना, सहानुभूति की बातें कर लें पर कुछ ग़म ऐसे होते हैं या फिर कहूँ ज़्यादातर ग़म ऐसे होते हैं जब तक ख़ुद न भुगतो दूसरे का दर्द समझ में ही नहीं आता। अमीर किसी भी धर्म या जाति का हो उसका काम तब भी चलता रहता है पर ग़रीब अगर मुसलमान हो, आदिवासी हो, दलित हो, स्त्री हो तो जीवन और ज़्यादा तकलीफ़ से भरता जाता है। इस क़िताब को पढ़ते हुए इस बात को हर पृष्ठ पर महसूस किया। — **नेहा नरूका** *फ़ेसबुक*

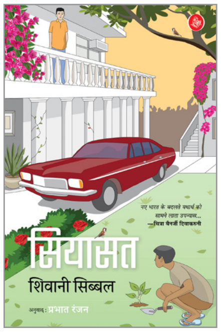

हमारे देश में अमीर-ग़रीब के बीच असमानता की जो खाई है वह न केवल उनकी सामाजिक स्थिति को निर्धारित करती है बल्कि उसके साथ-साथ उनको समाज में मिलने वाले अधिकारों को भी प्रभावित करती है। शिवानी सिब्बल का उपन्यास 'सियासत' ऐसी ही एक दुनिया की कहानी कहता है। मूल रूप से अंग्रेजी में Equations शीर्षक से प्रकाशित इस उपन्यास का हिन्दी अनुवाद हाल ही में राजकमल प्रकाशन से आया है। 'सियासत' की कहानी दिल्ली के एक उच्चवर्गीय परिवार और उससे जुड़े कुछ लोगों के आस-पास घूमती है, जो समाज के अलग-अलग तबकों से आते हैं। यह उच्चवर्गीय परिवार सिकंद हाउस नाम की एक बड़ी कोठी में रहता है। इस उपन्यास के मुख्य किरदार हैं- अहान, पारुल, अहान के पिता (आसिफ़), नूरिया, लक्ष्मण, बबिता और राजेश। —**राज बैरवा,** *विराट वैभव*

इस किताब में दिल्ली मेट्रो के ऐसे अनेक क़िस्से हैं जो उसमें रोज यात्रा करने वालों को सामान्य लग सकते हैं लेकिन देवेश ने जिस तरीक़े से इन क़िस्सों को शब्दों में पिरोया है, वह गजब है। दिल्ली मेट्रो ही इस किताब का मुख्य किरदार है। अन्य किरदार इसमें जुड़ते हैं और चले जाते हैं पर मेट्रो अगले क़िस्से में अपनी भूमिका के लिए वहीं और वैसे ही रहती है। अगर ये कहानियाँ कहीं और घट रही होती तो भी शायद उतनी सुंदर, भावुक और मार्मिक होती लेकिन देवेश ने इन क़िस्सों को इस तरह से बुना है कि इन्हें पढ़ते हुए आपको लगता है जैसे वह कहानी अभी आपके सामने ही घटित हो रही है। — **राज बैरवा,** *विराट वैभव*

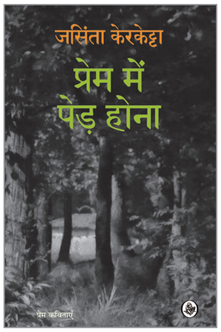

जसिंता केरकेट्टा की ये कविताएँ, जैसा कि स्वाभाविक है, उस प्रेम की कविताएँ नहीं हैं, जो केवल दो व्यक्तियों के बीच होता है, ये कविताएँ उस प्रेम पर केन्द्रित हैं जिससे समग्र सृष्टि को संबल मिलता है। वह प्रेम जो मनुष्य का प्रकृति से है, वह प्रेम जो प्रकृति बिना किसी प्रतिसाद की कामना के समूची मानवता को देती है! ये कविताएँ उस क्षुद्रता को भी सम्बोधित हैं, जिसका प्रदर्शन हम प्रकृति के उस प्रेम का अन्यायपूर्ण बँटवारा करके करते हैं। जसिंता ने बहैसियत कवि और बहैसियत व्यक्ति इस प्रेम के वैभव को बहुत नज़दीक से देखा और आत्मसात किया है; इसी प्रेम के चलते उन्होंने आदिवासी जन की पीड़ा और प्रकृति के आर्तनाद को अपनी कविता में लगातार जगह दी है। प्रेम क्यों नहीं बहुतों से हो सकता है? बहुत सारे लोगों, बहुत सारे बच्चों, स्त्रियों, पेड़-पौधों, नदी, झरनों, पहाड़ों और पूरी धरती से? वे सही ही पूछती हैं। इस संग्रह में निसन्देह कुछ कविताओं में हमें वह प्रेम भी मिलता है; जो दो व्यक्तियों के बीच होता है। लेकिन इसे भी देखने का उनका नज़रिया वही नहीं है, जो सबके लिए सामान्य है। इसीलिए वे ये पंक्तियाँ लिख पाती हैं : प्रेम में आदमी/क्यों एक हो जाना चाहता है?/अपनी भिन्नता के साथ/क्यों दो नहीं रह पाता?—और इस प्रश्न का समाहार वे वर्तमान के एक बड़े फलक पर ले जाकर करती हैं : इधर देश के प्रेम में कुछ लोग/सबको 'एक' कर देना चाहते हैं/जो 'एक' न हो पाए, वे मारे जाते हैं। प्रेम का अर्थ 'क़ब्ज़ा' नहीं होता/न किसी की देह, न ख़ुशियों, न सपनों पर—इन पंक्तियों को हम इस कविता-संग्रह का एकाग्र मंतव्य कह सकते हैं, जिसका विस्तार एक व्यक्ति से लेकर प्रकृति के विराट तक है। — **असीम तिवारी,** *फ़ेसबुक*

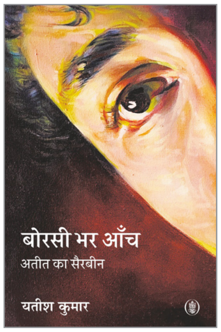

युवा रचनाकार यतीश कुमार ने 'बोरसी भर आँच' में अतीत की स्मृतियों के गुंजलक से अपने बचपन को याद करते हुए जीवन के 20 वर्षों का मार्मिक और ईमानदार संस्मरण सृजनात्मक तरीके से लिपिबद्ध किया है। रचनाकार की स्मृति-यात्रा को शब्दों में पिरोने की रचनात्मकता ने इस कथेतर गद्य को मासूम और खिलंदड़ा एक साथ बनाया है। यतीश अपने प्रारंभिक जीवन को याद करते हुए अपनी माँ, पिता, दूसरे पिता, भाई, बहन, दोस्त, रिश्तेदार, घर, ननिहाल आदि से संबंधित स्मृतियों को साझा करते हैं, जिससे यह उनके बचपन की आत्मकथा जैसी प्रतीत होती है। लेखक के लिए उनका यह संस्मरण अतीत में झाँकने की सैरबीन है। यह सैरबीन और कुछ नहीं बल्कि भाषा, शब्दों और शिल्प का व्यक्तिगत माध्यम है, जिससे एक बच्चा लगभग 40 वर्ष की दूरी से दुनिया को देखता है। —**यतींद्र मिश्र,** *दैनिक जागरण*

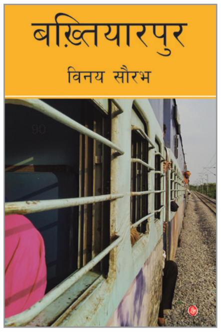

विनय सौरभ की कविताओं को एक बैठकी में पढ़ा ही नहीं जा सकता है। उन्हें पढ़ते हुए अपने अतीत, वर्तमान, भविष्य, परिवेश सभी से मुखातिब होना पड़ता है। ठहरकर अपनी ही टोह लेनी होती है। प्रारंभ में संग्रह को देखकर मन में आया कि कवि ने एक साधारण सी जगह के नाम पर इस संग्रह का नामकरण क्यों किया और एक साधारण सी ट्रेन के चित्र को कवर पेज पर क्यों अंकित किया गया, पर शीर्षक कविता सहित अन्य सभी कविताओं से गुजरते हुए ये समझ आ गया कि दरअसल विनय सौरभ हैं ही साधारण की असाधारणता के कवि। राजकमल प्रकाशन से आए इस संग्रह को सभी हिंदी साहित्य प्रेमियों तक पहुँचना ही चाहिए ***—आलोक मिश्रा,*** *फ़ेसबुक*

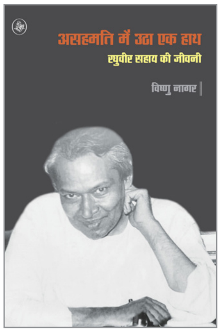

रजा फाउंडेशन की ओर से विष्णु नागर द्वारा लिखित रघुवीर सहाय की जीवनी 'असहमति में उठा एक हाथ' को पढ़ना उस दौर को एक बार फिर से जानना, समझना और याद करना है जिसने उन्नाव से आये एक युवक को दिनमान का सम्पादक और हिन्दी के जाने-माने कवि व कथाकार रघुवीर सहाय बनाया। यह जीवनी दिल्ली में रघुवीर सहाय के जीवन-संघर्षों, दिनमान के संपादक के रूप में उनके योगदान, उनके विशाल लेखकीय सरोकारों, उनके परिवार, उनके मित्रों, उनके विचारों, उनकी राजनैतिक प्रतिबद्धताओं को सामने लाने के साथ-साथ उनके जीवन के उन अनछुए पहलुओं को भी सामने लाती है जिन्हें पढ़कर हम अपने आपको और अधिक समृद्ध और उनसे अधिक करीब महसूस करते हैं। इस किताब में रघुवीर सहाय के व्यक्तित्व और रचनाकर्म की गहराई, सघनता, सूक्ष्मता, उनकी संवेदना, उनके परिवार के संदर्भ का बारीक विश्लेषण ही नहीं है बल्कि आपातकाल के दौरान और बाबरी मस्जिद के ध्वंस के बाद जिन मन:स्थितियों से रघुवीर सहाय गुज़रे, वह भी दर्ज है जिसे पढ़ते वक्त हम अपने आपको उस दौर में पहुँचा हुआ पाते हैं। पचास से लेकर नब्बे का समय वह समय था जिसने इस देश को बताया कि 'रास्ता इधर है' लेकिन बाद के सालों में जो घटनाक्रम हुआ उसने देश की राजनीति और सामाजिकी को ही बदल दिया जिसे रघुवीर सहाय ने गहराई से महसूस किया और जिसे विष्णु नागर ने संवेदनात्मक रूप से दर्ज किया है। इसे दर्ज करते हुए विष्णु नागर ने बेइंतहा समझदारी, विवेकशीलता और उनके साथ अपने आत्मीय संबंधों का परिचय दिया है। **— हरियश राय,** *'परिकथा' पत्रिका (मई-जून 2024 अंक)*

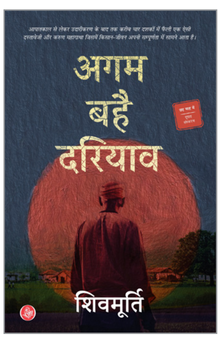

शिवमूर्ति ने इस उपन्यास में लोकगीतों और कहावतों का बहुत ही सुंदर और सामयिक उपयोग किया है जिनने इसमें जान फूँक दी है। इसमें हर अवसर पर गाये जाने वाले गीत हैं तो गाँवों के बुजुर्गों द्वारा समय- समय पर पूछी जाने वाली कठबैठी भी। कोई कथाकार अपने समय के लोकगीतों का कितना सही उपयोग अपनी रचना में कर सकता है, यह 'अगम बहै दरिया' व में देखा जा सकता है। बरात जाने पर घर में महिलाओं के स्वांग और बरात में होने वाले शास्त्रार्थ को आज की युवा पीढ़ी नहीं जान पाएगी। इन दोनों का वर्णन अदभुत है। **—रामधनी द्विवेदी,** *जनसंदेश टाइम्स*

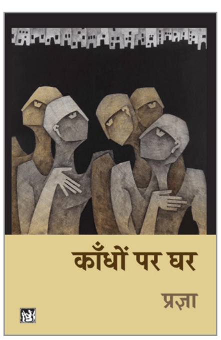

प्रज्ञा का उपन्यास इस सप्ताह आरम्भ में ही पढ़कर ख़त्म किया था। प्रज्ञा ने अपने उपन्यास की कथा-भूमि के रूप में फिर दिल्ली को चुना है। यह वह दिल्ली है, देखकर भी जिसकी अनदेखी की जाती है। यमुना के गर्भ में बसी अनाम ज़िंदगियों के जीवन-संघर्ष को प्रज्ञा ने नाम और पहचान दी है। प्रज्ञा यथार्थवादी परम्परा की लेखिका हैं। इस उपन्यास में जीवन यथार्थ का गल्प के रूप में पुनराविष्कार करते हुए लेखिका ने विकास की मनुष्य-विरोधी अवधारणा को प्रश्नांकित किया है। 'काँधों पर घर' का बहुपर्तीय यथार्थ पाठक को पाठ-सुख के साथ साथ यथार्थ के प्रति एक सजग दृष्टि भी देता है! कहन की पारम्परिकता के भीतर ही लेखिका नवाचार करती हैं! **— हृषीकेश सुलभ,** *फ़ेसबुक*

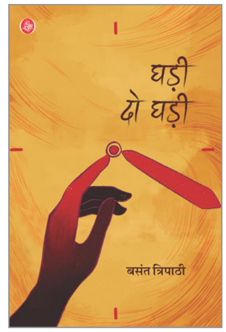

इस संग्रह की कविताओं में स्मृतियों का ख़ज़ाना है। आत्मलोलुपता, अवसरवाद और सब कुछ ख़त्म होने के दौर में कवि स्मृतियों में रहना चाहता है। इसमें उसका ज़िंदा बचे रहने का एहसास बचा रहता है। इस अपार्टमेंट और महानगरीय सभ्यता में कवि अपने अतीत के घर, द्वार और आँगन को याद करता है जहाँ सहजता और मानवीयता थी। यह संग्रह उस प्रतिस्पर्धा पर भी ध्यान आकृष्ट कराता है जहाँ व्यक्ति किसी से मिलता है तो वह या तो जीतता है या फिर हारता है, मिलता तो क़तई नहीं। इस संग्रह में वह कचोट भी है जो कुछ न कर पाने से उपजी है; चाहे वह किसी को याद करना हो, किसी को आवाज़ देना हो या फिर पूनम की रात में आसमान निहारना हो। अत: अपने को बहुत दूर छोड़ आए कवि का आत्म की तलाश में निकलना कवि का केंद्रीय स्वर है जो मानवीय जिजीविषा का वृहद वृतान्त रचता है। इसमें कवि का 'मैं' जनसमूह का 'मैं' है। इस संग्रह में आए नए बिंब प्रतीक चौंकाते हैं। भाषा और शिल्प का सटीक संयोजन बसंत की कविताओं को अग्रणी कड़ी में लाकर खड़ा कर देता है। अपने हर संग्रह के साथ वे अपने कवि को परिष्कृत करते हैं और पाठकों से बेहतर संवाद करते हैं। **— श्री कृष्ण नीरज,** *कृति बहुमत*

भारतीय राष्ट्रवाद: एक अनिवार्य पाठ इतिहासकार एस. इरफ़ान हबीब द्वारा संपादित अंग्रेज़ी किताब 'इंडियन नेशनलिज़्म: द एसेंशियल राइटिंग्स' का हिन्दी अनुवाद है। इस किताब में भारत के स्वतंत्रता आंदोलन के प्रमुख नेताओं और चिंतकों के भारतीय राष्ट्रवाद से संबंधित लेख और भाषण-अंश संकलित हैं। किताब बताती है कि आज़ादी के संघर्ष और उसके बाद भी सक्रिय रहे नेताओं की नज़र में राष्ट्रवाद क्या था और वे किस तरह के राष्ट्र और राष्ट्रवाद का सपना देखते थे।

— कारवाँ हिन्दी, *अप्रैल-जून 2024 अंक*

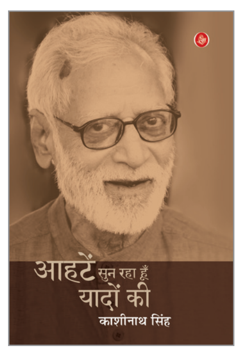

अपने जीवन में आए विभिन्न विशिष्ट साहित्यिक व्यक्तियों के साथ संगत में बीते विगत 60 वर्षों का बेतरतीब लेखाजोखा काशीनाथ सिंह अपनी इस संस्मरणात्मक पुस्तक में करते हैं। चूँकि उनका समस्त जीवन काशी में बीता तथा काशी और काशीनाथ सिंह ने एक-दूसरे को भरपूर जिया। काशी में यह काशीत्व कहीं भी विलुप्त नहीं है। वह दूसरों की औपचारिकता को उघाड़ने के साथ-साथ अपने को भी नहीं बख़्शता। खेल में 'सेल्फ गोल' कर लेना शायद खेल का सबसे आनंदपूर्ण क्षण होता है। इसे पेशेवर खिलाड़ी नहीं जानते। देश के हिन्दी साहित्य की मानसिकता, सामाजिकता और शक्ति केंद्रों के बनते-बिगड़ते समीकरणों के इस कालखंड में वे अपने जीवंत संपर्क में आए जिन पात्रों, साहित्यकारों को अपने संस्मरणों में शामिल करते हैं, वे एक-दूसरे को स्थापित-विस्थापित करते नहीं बल्कि उनके अच्छे-बुरे, सशक्त और कमजोर सभी पक्षों को बड़ी बेबाकी और स्थितप्रज्ञता से उद्घाटित करते हैं। यह संकलन अपनी खिलंदड़ी भाषा, निस्पृह बनारसी तेवर और चमकदार फ़्लैश बैक के कारण पठनीय बन पड़ा है। वे शब्द चुनते नहीं बल्कि प्रसंग और भाव के अनुसार शब्द अपनी सहज देशजता के साथ उतरते से लगते हैं और उस प्रसंग को जीवंत बना देते हैं। **— रमेश जोशी,** *दैनिक ट्रिब्यून*

चर्चा में किताब

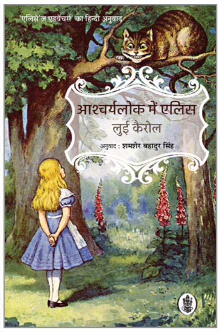

'एलिसे'ज़ एडवेंचर्स' के हिन्दी अनुवाद 'आश्चर्यलोक में एलिस' को दोबारा पढ़ते हुए मन में पहला सवाल तो यही आया कि हमारा अपना आश्चर्यलोक कहाँ है? क्या यह कभी था ही नहीं या कि हमने उसे किसी ख़ुमार में या नासमझी में खो दिया। यही सवाल पिछले दिनों फ्रांत्स होलर और निकोलाउस हाइडलबाख़ की 'मेरी बड़ी किताब' पढ़ते हुए भी मन में बार बार उठता रहा था। इन किताबों को पढ़ते हुए कल्पना की जिस जादुई उड़ान में उड़ना हुआ वह कम से कम समकालीन हिन्दी साहित्य में तो दुर्लभ बात है। वह लोककथाओं में ज़रूर मौजूद है पर लोक या लोककथाओं के साथ हमारा रिश्ता किस क़दर विकृत हुआ है इसे अलग से बताने की ज़रूरत नहीं है। ऐसा क्यों हुआ कि कल्पना की उड़ान को अनिवार्य तौर पर यथार्थविरोधी मान लिया गया और फंतासी हमें फाँसी की तरह लगने लगी। कई बार तो यह भी लगता है कि बहुत ज़्यादा यथार्थ-यथार्थ चिल्लाने के पीछे उद्देश्य ही यह था कि अपनी कल्पनाविहीन जड़ता को सैद्धान्तिक जामा पहनाया जा सके। हमारे पास पंचतंत्र है। उसका अपना जादू है पर जैसे वहीं से यह भी तय हो गया कि जब बच्चों के लिए या कि युवकों के लिए कहानियाँ रची जाएँगी तो उनमें शिक्षा देने या संदेश देने का काम अनिवार्य रूप से किया ही जाएगा। ऐसे में बच्चों के नाम पर लिखी गई ज़्यादातर रचनाएँ इतनी उबाऊ और कल्पनाविहीन होती गईं कि लगभग पाठयक्रम में बदल गईं। इसके बाद उनका वही होता है जोकि हो सकता है। दूसरे यह कि इन रचनाओं में जो पक्षी, जानवर या कि पेड़-पौधे आते हैं उन पर इनसानी अपेक्षाएँ इस कदर आरोपित कर दी जाती हैं कि वे अपनी पहचान खो बैठते हैं। जबकि 'आश्चर्यलोक में एलिस' या कि 'मेरी बड़ी किताब' जैसी किताबों में जैसे वे अपनी पहचान का ही उत्सव मना रहे होते हैं। इसके बावजूद कि एलिस को यहाँ भी किसी चूहे या कि खरगोश से बात करने का सलीका सीखना है। यह किताब एक स्वप्न की तरह एलिस के भीतर उतरी है जो कि उसे हमेशा याद रहनेवाली है। इसमें एक रानी है जो चाहती है कि सज़ा पहले दी जाय और न्याय बाद में किया जाय। वह बात-बात में हर किसी की गर्दन उड़ा देने की बात करती है। यह अलग बात है कि यह रानी अपने सैनिकों के लिए भी उपहास की पात्र बन गई है। यहाँ आकर कल्पना की यह मोहक उड़ान जिस यथार्थ को दृश्यमान करती है वह इसीलिए सम्भव हो पाता है कि यह अपने ऊपर बेवजह के अंकुश नहीं लगाती। इसीलिए पाठ के समय भी यह जादू बरक़रार रहता है बल्कि बढ़ता ही जाता है। बच्चों को उड़ान पहले चाहिए, शिक्षा बाद में। हम इतनी सी बात भला क्यों नहीं समझ पाते। इस किताब का मनोहारी अनुवाद सुगढ़ कवि शमशेर बहादुर सिंह ने किया है। — **मनोज पांडेय,** *फ़ेसबुक*

सिमोन द बोवुआर लिखती हैं, ..'प्रेम एक तरह का प्रतिशोध है।' वे फिर कहती हैं, '..प्रेम एक ख़ुशगवार फ़तह भी है।' मनोज कुमार पांडेय के काव्य-संग्रह 'प्यार करता हुआ कोई एक' में प्रेम न तो 'प्रतिशोध' है और न ही कोई 'फतह'। यहाँ प्रेम, जीवन और जीवन संघर्षों के बीच घनीभूत सकर्मक रूपबंध है। प्रेम, इस संग्रह में जीवन की माया बनकर नहीं बल्कि अपने रोजमर्रेपन के साथ कभी धूप तो कभी छाया बनकर आया है। इस संग्रह में प्रेम, राग भैरवी की तरह नहीं बल्कि राग बिलावल की तरह आया है जहाँ आसानी से प्रेम के सभी शुद्ध स्वर लगते हैं। यहाँ प्रेम, जितना पार्थिव के कगार तक जाता है उतना ही अपार्थिव के झुरमुटों तक भी। इस संग्रह में प्रेम के स्वर की हरकतें जितनी बाहरी हैं उससे कहीं ज्यादा भीतरी हैं। इसलिए यह महज संयोग नहीं है कि इस काव्य-संग्रह की पहली ही कविता का पहला शब्द 'भीतर' है, जो बार-बार आता है। — **अमरेन्द्र कुमार शर्मा,** *फ़ेसबुक*

उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र,प्रयागराज Ministry of Culture, Government of India द्वारा 40 दिवसीय प्रस्तुतिपरक नाट्य कार्यशाला के समापन पर पीयूष मिश्रा द्वारा लिखित नाटक *गगन दमामा बाज्यो* का मंचन सांस्कृतिक केंद्र प्रेक्षागृह में हुआ।

चंचल चौहान की किताब 'साहित्य का दलित सौंदर्यशास्त्र' पर गोष्ठी

जनवादी लेखक संघ और दलित लेखक संघ ने संयुक्त रूप से चंचल चौहान की किताब 'साहित्य का दलित सौंदर्यशास्त्र' पर एक विचार गोष्ठी का आयोजन किया। इस गोष्ठी में बजरंग बिहारी तिवारी, जयप्रकाश कर्दम, डॉ. सरोज कुमारी, डॉ. रश्मि रावत, डॉ. राजकुमार, जगदीश पंकज, हीरालाल राजस्थानी, संजीव कुमार व हरिवंश राय भी अपनी बात कही। चंचल चौहान अपनी इस किताब में यह मानते हैं कि जिस तरह मार्क्स के नज़रिए से दुनिया भर के साहित्य को देखने परखने के लिए मार्क्सवादी सौंदर्यशास्त्र की रचना हुई है, उसी तरह ज्योतिबा फुले और आंबेडकरवादी नज़रिए से साहित्य के दलित सौंदर्यशास्त्र की रचना की जानी चाहिए। किताब से गुज़रने पर हमें पता चलता है कि वर्ण आधारित वर्गीय सौंदर्य की अभिरुचि ही काम करती है और यह सौंदर्य अभिरुचि विषय के चुनाव से लेकर बिम्ब, प्रतीक और कथन की भंगिमाओं में देखी जा सकती है। उनका मानना है कि जिस तरह हम दलित सौंदर्यशास्त्र के नजरिए से विश्व साहित्य का मूल्यांकन कर सकते हैं उसी तरह कविता की रचना प्रक्रिया पर हुए आलोचनात्मक विमर्श की व्याख्या भी इसी नज़रिये से की जानी चाहिए इससे यह पता चल सकेगा कि किस तरह क्लासिकल विचारधारा ने झूठ का सहारा लिया था या अपने अधकचरे ज्ञान का परिचय दिया था। इस किताब के माध्यम से चंचल चौहान कई उदाहरण देकर यह बतलाने की कोशिश करते हैं कि दलित साहित्य शास्त्र एक तरह से जाति उन्मूलन की वैचारिकी से जुड़ा हुआ है, ठीक उसी तरह जिस तरह मार्क्सवादी सौंदर्य शास्त्र वर्ग विषमता के उन्मूलन की वैचारिकी से जुड़ा हुआ है।

राजभाषा हिन्दी के लिए आसान:राजभाषा सहूलियतकार

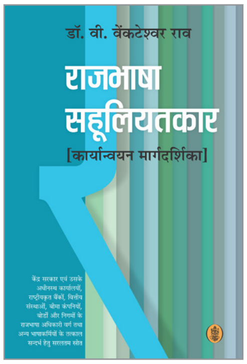

डॉ. वेंकटेश्वर राव की पुस्तक 'राजभाषा सहूलियतकार' हिन्दी के कार्यालयीन क्रियान्वयन के लिए उपयोगी है। सहूलियतकार शब्द से ही यह स्पष्ट हो जाता है कि हिन्दी को व्यवहार की भाषा में सरलतम दिशा में ले जाए जाने की ज़रूरत है। पर इस पुस्तक का उद्देश्य केन्द्र सरकार के समस्त कार्यालयों, बैंक एवं सार्वजनिक उपक्रमों में हिन्दी के प्रयोग से संबंधित दिशा-निर्देशों के अनुपालन से संबंधित है। लेखक ने केन्द्र सरकार की भाषा-नीति, हिन्दी के प्रयोग और निरंतर प्रशिक्षण की दृष्टि से समस्त आदेशों का संचयन किया है। संघ की राजभाषा नीति में समय-समय पर बदलाव हुए हैं। जो संवैधानिक प्रावधान हैं, उनका संचयन और स्पष्टीकरण प्रारूपों के साथ किया है। दिशा तो प्रयोजनमूलक हिन्दी की भी है, पर यह पुस्तक केवल राजभाषा हिन्दी के सरकारी प्रयोग, प्रशिक्षण, निरीक्षण, अनुपालन, संसदीय निरीक्षण तक सीमित नहीं है। राजभाषा हिन्दी के लिए पत्र-पत्रिकाओं के प्रकाशन, संबद्ध विभाग में इस हिन्दी के प्रयोग के प्रारूप, पारिभाषिक शब्दावली, राजभाषा मास में हिन्दी में सृजनात्मक प्रतियोगिताएँ, प्रदर्शनियाँ, वार्षिक सम्मेलन, प्रशिक्षकों के साथ संगोष्ठियों के आयोजन आदि के क्रियान्वयन की सकर्मक निरंतरता के लिए यह पुस्तक मार्गदर्शन करती है।

किसी विभाग में केन्द्रीय स्तर से लेकर लघुतम इकाइयों तक हिन्दी के प्रशिक्षण की व्यवस्था में राजभाषा अधिकारियों की भूमिका, पर्यवेक्षण और अनुपालन, दस्तावेजों के अनुरक्षण, कार्यालयीन कामकाज में हिन्दी टिप्पणियाँ, पत्राचार और प्रशिक्षण संबंधी परीक्षाओं के आयोजन एवं लेखा-प्रक्रिया से कार्यालयीन कामकाज में हिन्दी संवर्धन की दिशा तय होती है। अंकेक्षण और निरीक्षण में कोई आपत्ति न आए इसके लिए सरकार द्वारा आदेश जारी किये गये हैं। ये सभी इस पुस्तक में उपलब्ध हैं। कार्यालयीन कामकाज में हिन्दी की प्रगति का मूल्यांकन, प्रोत्साहक योजनाएँ, आभिलेखन एवं रिपोर्टिंग की नियमितता से कर्मचारियों में हिन्दी के व्यवहार की दिशा में स्पष्ट होती है। सभी स्तरों पर समितियों, निरीक्षण अधिकारियों की कार्यसूची एवं संयोजकों की भूमिका निर्धारित की गयी है। हिन्दी के संवर्धन के लिए पुस्तकालय, पत्रिकाओं का प्रकाशन, राजभाषा मास में कर्मचारियों के बीच सृजनात्मक प्रतियोगिताएँ, प्रदर्शनियों के आयोजन की रूपरेखा इस दिशा में उपयोगी है। राष्ट्रीय और नीचे के स्तर पर पुरस्कारों के लिए आयोजन खर्च के प्रावधान हैं। विभागीय कर्मचारी से लेकर शीर्ष स्तर पर उत्तरदायित्व सुनिर्धारित हैं। यह पुस्तक उन आदेशों, प्रारूपों, प्रशासनिक शब्दावली, निरीक्षण व्यवस्थाओं के लिए दस्तावेजी संकलन है और उनकी संगत व्याख्या भी। राजभाषा हिन्दी के क्रियान्वयन के लिए संसदीय समितियों के निरीक्षण के प्रावधान और प्रतिवेदन ज़रूरी हैं। इनके नियम और निरीक्षण व्यवस्थाओं के लिए भी संगत आदेश हैं। इसलिए यह पुस्तक तत्काल संदर्भ (रेडी रेकनर) जैसी है। लेखक ने आदेशों-नीतियों का दस्तावेजीकरण ही नहीं किया है, बल्कि सहूलियत के लिए उनकी संगत धारणा भी स्पष्ट की है। यह पुस्तक कार्यालयीन प्रशासन के लिए संदर्भ ग्रंथ भी है और प्रत्येक विभागीय प्रक्रिया में उपयोगी है। **— बी एल आच्छा**

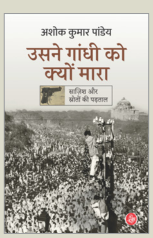

दैनिक जागरण नीलसन बेस्टसेलर सूची (जनवरी-मार्च 2024) की कथा श्रेणी में पीयूष मिश्रा का आत्मकथात्मक उपन्यास 'तुम्हारी औकात क्या है पीयूष मिश्रा' पहले नम्बर पर और कथेतर श्रेणी में अशोक कुमार पांडेय की किताब 'उसने गांधी को क्यों मारा' तीसरे नम्बर पर रही।

राजकमल ऑनलाइन बुक फेयर-2024

पुस्तकप्रेमियों के लिए यह गर्मी की छुट्टियाँ ख़ास बनाने के लिए राजकमल प्रकाशन समूह ने जून में एक विशेष आयोजन किया जिसमें राजकमल प्रकाशन समूह की वेबसाइट www.rajkamalprakashan.com पर 21 से 30 जून तक ऑनलाइन बुक फेयर का आयोजन किया गया। इस दौरान वेबसाइट पर उपलब्ध समूह की सभी किताबों पर पाठकों को आकर्षक छूट मिली। साथ ही प्रतिदिन अलग-अलग विषयों की किताबों को विशेष छूट पर उपलब्ध कराया गया। ऑनलाइन बुक फेयर के दौरान 500 रुपये से अधिक मूल्य के सभी ऑर्डर की डिलीवरी भी मुफ्त में की गई। ऑनलाइन बुक फेयर के विशेष आकर्षण ऑनलाइन बुक फेयर में पाठकों के लिए 900 से अधिक उपन्यास, 500 से अधिक कहानी संग्रह, 100 से अधिक जीवनियाँ, 650 से अधिक काव्य पुस्तकें, आलोचना की 550 से अधिक पुस्तकें, 2500 से अधिक कथेतर विधा की किताबें उपलब्ध कराई गयीं। साथ ही 50 से अधिक नए लेखकों की किताबों समेत 250 से अधिक नई किताबें भी उपलब्ध रहीं। पाठकों की सुविधा के लिए सभी आयुवर्ग को ध्यान में रखकर विभिन्न विधाओं की किताबों के सेट भी बनाए गए। ऑनलाइन बुक फेयर के दौरान प्रतिदिन रात को 11 से 12 बजे अलग-अलग विधाओं की किताबों पर बंपर छूट मिली।

सुदूर इलाकों में रहने वाले पाठकों तक किताबें पहुँचाने की कोशिश पर राजकमल प्रकाशन के कार्यकारी निदेशक (सीईओ) आमोद महेश्वरी ने बताया कि, "राजकमल प्रकाशन की वेबसाइट पर हमने तीसरी बार ऑनलाइन बुक फेयर का आयोजन किया। कोविड-19 महामारी के दौरान जब पुस्तक मेलों आदि के आयोजन पर रोक लगी हुई थी, तब हमने पहली बार ऑनलाइन बुक फेयर आयोजित किया जिसका पाठकों ने बड़े उत्साह से स्वागत किया। साथ ही राजकमल की इस पहल की खूब सराहना भी हुई। पिछले दो ऑनलाइन बुक फेयर की सफलता और पाठकों से मिले भरपूर सहयोग ने हमारा मनोबल और भी बढ़ाया और हमने हर साल इसे आयोजित करने का फैसला किया।" उन्होंने कहा, "अधिकतर पुस्तक मेलों का आयोजन बड़े शहरों में होता है और किताबें ख़रीदने के लिए वहाँ तक पहुँचना सभी के लिए संभव नहीं हो पाता है। हमें बहुत से पाठकों की ओर से यह शिकायत भी मिलती है कि उनके गाँव-शहर में कोई पुस्तक मेला नहीं लगता है। हमारी कोशिश यही है कि देश के सुदूर इलाक़ों में रहने वाले पाठकों को भी उनकी मनपसंद पुस्तकें प्राप्त करने में आसानी रहे। इसी को ध्यान में रखते हुए हमने ऑनलाइन बुक फेयर का आयोजन किया। और हर बार की तरह इस बार भी ऑनलाइन बुक फेयर में हमें पाठकों का सहयोग और स्नेह मिला।

'राजकमल ऑनलाइन बुक फ़ेयर 2024' में पाठकों द्वारा सबसे अधिक पसंद की गयी किताबें

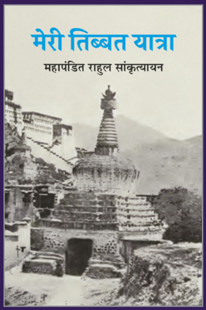

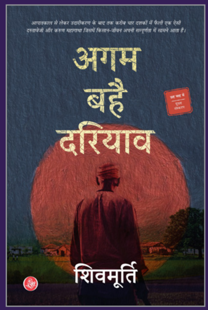

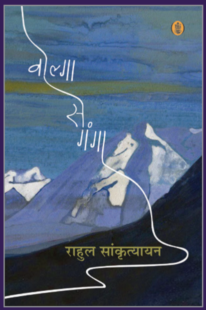

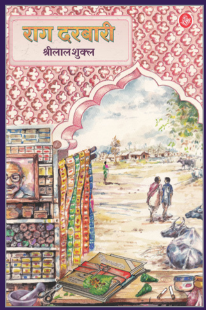

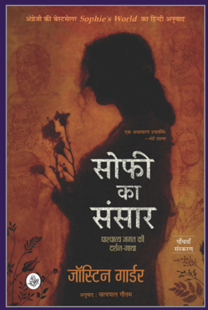

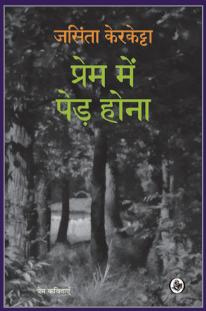

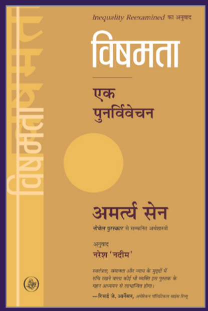

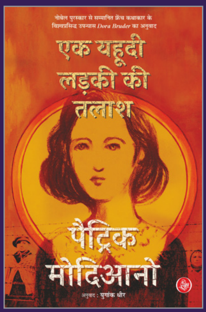

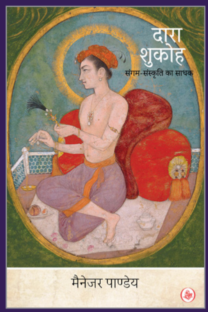

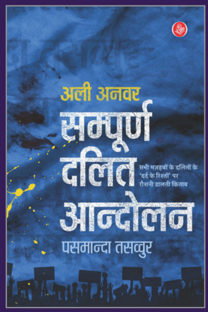

अरुंधति रॉय को 'पेन पिंटर प्राइज़-2024' मिलने की हार्दिक बधाई

अरुंधति रॉय की पुस्तकें

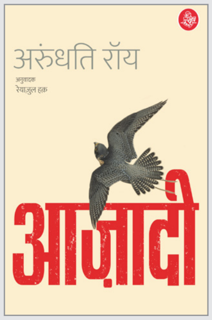

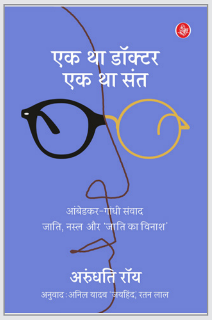

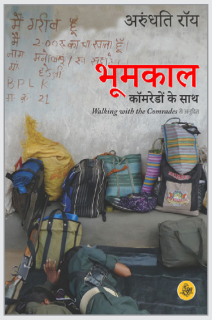

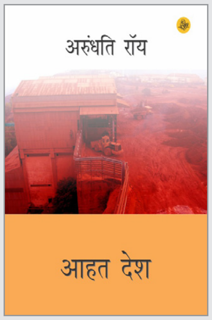

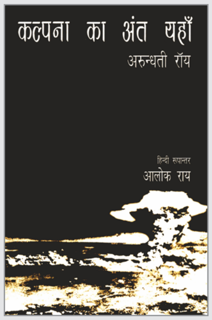

अन्याय-शोषण के खिलाफ संघर्ष की शक्ति देती हैं दिनकर की रचनाएँ

राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' की 50वीं पुण्यतिथि पर झारखंड के नेतरहाट आवासीय स्कूल में 'रश्मिरथी पर्व' मनाया गया। झारखंड के नेतरहाट आवासीय विद्यालय के सभागार में 'रश्मिरथी पर्व' का आयोजन हुआ। झारखंड चैप्टर के स्पिक मैके अध्यक्ष एवं झारखंड के चीफ कन्जर्वेटिव पदाधिकारी सिद्धार्थ त्रिपाठी ने कहा कि उनकी रचनाएँ अन्याय एवं शोषण के खिलाफ संघर्ष की शक्ति देतीं हैं।

स्वतंत्रता संग्राम में गौरव के साथ पढ़ी जाती थी दिनकर की कविताएँ

सिद्धार्थ त्रिपाठी ने कहा कि राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' की कविताएँ भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के समय देश के कोने-कोने में गौरव के साथ पढ़ी जाती थीं। उनकी ओजस्वी वाणी आजादी की लड़ाई में सर्वस्व न्योछावर करने के लिए प्रेरित करती थी। स्वतंत्रता के बाद उनकी रचनाओं ने नये भारत के निर्माण की प्रेरणा दी। 'रश्मिरथी', 'हुंकार', 'कुरुक्षेत्र', 'उर्वशी', 'परशुराम की प्रतीक्षा' और 'संस्कृति के चार अध्याय' उनकी कालजयी रचनाएँ हैं।

कालजयी रचनाओं के लिए दिनकर को मिले कई पुरस्कार

इन्हीं रचनाओं के लिए रामधारी सिंह 'दिनकर' को साहित्य अकादमी, हिंदी साहित्य सम्मेलन और भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार मिले। राज्यसभा के सदस्य, भागलपुर विश्वविद्यालय के कुलपति तथा भारत सरकार के प्रथम हिन्दी सलाहकार के रूप में उन्होंने शिक्षा, भाषा तथा साहित्य जगत में अपनी जगह बनाई। राष्ट्रकवि राष्ट्रीय चेतना, स्वाभिमान एवं संवेदना के ओजस्वी कवि थे। आज भी उनकी कृतियों के अध्ययन और मनन से अन्याय एवं शोषण के खिलाफ संघर्ष की शक्ति मिलती है।

मन में हताशा का भाव हो, तो दिनकर की रचना पढ़ें, ऊर्जा मिलेगी

वरीय फिल्म निर्माता एवं एडीटर असीम सिन्हा ने इस अवसर पर कहा कि राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' स्मृति न्यास एवं राष्ट्रकवि 'दिनकर' प्रतिष्ठान साहित्यिक, सांस्कृतिक, सामाजिक उत्थान के लिए दिनकर के विचारों को जन-जन तक पहुँचाने के लिए प्रतिबद्ध है। दिनकर की कविताएँ आज भी युवाओं को प्रेरित करती हैं। कहा कि जब मन में हताशा का भाव हो, तो दिनकर की कोई रचना पढ़ लें, ऊर्जा से भर जाएँगे।

सार्वभौम सत्य के कवि थे रामधारी सिंह दिनकर

दिनकर के अध्येता गौतम चौधरी ने कहा कि दिनकर सार्वभौम सत्य के कवि थे। राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' स्मृति न्यास एवं राष्ट्रकवि 'दिनकर' प्रतिष्ठान का यह कार्य अपने आप में अनूठा है। प्राचार्य संतोष कुमार ने कहा कि राष्ट्रकवि दिनकर भारत के लोकप्रिय कवि थे। महान शब्द पुत्र थे, जिनसे राष्ट्र का गौरव बढ़ा। बेहद लोकप्रिय और उपयोगी है दिनकर की रचना 'रश्मिरथी' वाटर बैंक के अध्यक्ष साकेत कुमार ने कहा कि राष्ट्रकवि दिनकर की 'रश्मिरथी' बेहद लोकप्रिय एवं उपयोगी है। इस रचना को पढ़ने से चेतना का संचार होता है। सकारात्मक वातावरण बनाने में मदद मिलती है। कर्ण के माध्यम से समरस समाज का निर्माण ही दिनकर का मुख्य उद्देश्य था।

इस तरह रामधारी सिंह के नाम में जुड़ा 'दिनकर

राष्ट्रकवि दिनकर प्रतिष्ठान के अध्यक्ष एवं दिनकर के पौत्र ऋत्विक उदयन ने कहा कि प्रकाश को प्रकाश, प्रकाश से मिलता है और उस प्रकाश को प्रकाश दिनकर से मिलता है। तो इस तर्क से मैं दिनकर हुआ। और उस दिन उन्होंने अपना उपनाम दिनकर कर लिया। बाबा के पिताजी का नाम रवि था। कभी-कभी वह यह भी कहते थे कि रवि का पुत्र दिनकर हुआ।

रश्मिरथी पर्व को सफल बनाने में इनकी रही अहम भूमिका

'रश्मिरथी पर्व' राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' स्मृति न्यास एवं राष्ट्रकवि 'दिनकर' प्रतिष्ठान ने संयुक्त रूप से किया। इस 'रश्मिरथी पर्व' को सफल बनाने में नेतरहाटा आवासीय विद्यालय के गणित के शिक्षक अभिषेक मिश्रा एवं हिन्दी के शिक्षक नागेंद्र मंडल ने अहम भूमिका निभाई।

इस बीच जो हमसे बिछड़ गए

विनम्र श्रद्धांजलि

शरद पगारे

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक अशोक कुमार महेश्वरी ने बी.के. ऑफसेट, पंचशील गार्डन, नवीन शाहदरा, दिल्ली-32 से मुद्रित कराकर राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, 1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित किया।
संपादक : अशोक कुमार महेश्वरी